सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-41, अंक-10, कुल पृष्ठ-36, आषाढ़-श्रावण, विक्रम सम्वत् 2081, जुलाई, 2024

बंदऊ गुरु पद कंज

■ डॉ. प्रणव पंड्या

गुरु देते हैं जीवन का ज्ञान

■ मुरारी बापू

कृतज्ञता एवं श्रद्धा समर्पण का पर्व

■ सुधांशु जी महाराज

पाठकों से निवेदन

प्रिय पाठको!

इन दिनों यह अनुभव हम और आप प्रतिदिन कर रहे हैं। हर वस्तु का मूल्य बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। चाहे रोजमर्रा का सामान हो या लिखने-पढ़ने की सामग्री-हर चीज की कीमत कई गुनी बढ़ चुकी है। कागज महंगा हो गया है, छपाई महंगी हो गई है। पिछले दो-तीन माह से पत्रिका रंगीन छप रही है। स्वाभविक रूप से इन सबका असर आपकी लोकप्रिय पत्रिका 'सेवा समर्पण' पर भी पड़ रहा है। किन्तु पाठकों ध्यान में रखते हुए 'सेवा समर्पण' के मूल्य में पिछले कापी समय से कोई वृद्धि नहीं की गई। सुचारू रूप से चलाने के लिए पर अब लग रहा है कि यह आवश्यक है। इसलिए अब एक अंक का मूल्य 20 रु., वार्षिक 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रु. किया जा रहा है। यह वृद्धि अप्रैल, 2024 के अंक से लागू होगी।

आशा है सुधी पाठक पूर्व की तरह आगे भी अपना अमूल्य सहयोग देते रहेंगे।

– सम्पादक

छात्रावास का शुभारम्भ

झण्डेवाला विभाग के अन्तर्गत कमला नगर जिले के सावन पार्क में सेवा भारती भवन में केशव छात्र निकेतन छात्रावास का शुभारंभ हवन पूजा और दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। मुख्य अतिथि श्री संजीव गर्ग जी, श्रीमती नीरू जी उपस्थित रहे। छात्रावास संचालन में अपना अमूल्य सहयोग देने वाले दानदाता और समाज के अन्य प्रमुख बंधु/भगिनी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सेवा भारती प्रांत संगठन मंत्री श्री शुकदेव जी, सह संगठन मंत्री सुनील जी, श्रीमती संगीता त्यागी जी, छात्रावास प्रमुख श्री इन्द्रनील जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से माननीय विभाग संघचालक श्री श्रवण जी, जिला संघचालक श्री सतीश जी के साथ ही विभाग और चारों जिलों के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कुल संख्या 80 की करीब रही। कार्यक्रम का समापन कल्याण मंत्र से हुआ सभी के लिए रुचिकर भोजन प्रसाद की व्यवस्था थी। ❒

चिकित्सा शिविर

चित्रा विहार केन्द्र पर 8 जून को चिकित्सा शिविर आयोजित हुआ। इस अवसर पर मरीजों को हौम्योपैथिक दवाइयां दी गई। लाभार्थियों की संख्या 30 के करीब रही। ❒

किशोरी शाखा

गत 11 जून, 2024 को पूर्वी विभाग में इन्द्रप्रस्थ जिला, मंडावली नगर में किशोरी शाखा की कक्षा ली गई। शिक्षिकाओं ने उपस्थित बच्चों को कई तरह के योगासन एवं चित्रकला की जानकारी दी। ❒

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ.. राम कुमार

सम्पादक
डॉ.. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-41, अंक-10, कुल पृष्ठ-36, जुलाई, 2024

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
ऐसे बना भगवा ध्वज 'गुरु'	आचार्य मायाराम पतंग	5
बंदऊ गुरु पद कंज	डॉ. प्रणव पंड्या	6
गुरु देते हैं जीवन का ज्ञान	मुरारी बापू	8
कृतज्ञता एवं श्रद्धा समर्पण का पर्व	सुधांशु जी महाराज	10
सफलता की सीढ़ी चढ़ती बबीता	बबीता कुमारी	11
हनुमान जी बने पुरोहित	प्रतिनिधि	12
गुरु अर्जनदेव महाराज जी और छबील परंपरा	वीरेन्द्र गुप्ता	13
अलग ही माटी के थे सुदर्शन जी	प्रतिनिधि	14
श्रद्धांजलि : श्रीमती सुन्दर शांता चड्ढा		15
राजमाता अहिल्याबाई होलकर	आचार्य अनमोल	16
पाथेय (आध्यात्मिक)	सरोजिनी चौधरी	21
जन-जन के नायक शिवाजी महाराज	मानवेन्द्र	22
ग्रीष्मावकाश शिविरों के समाचार		25
किशोरी विकास प्रकल्प	अंजू पांडेय	26
30829 नियमित सेवा कार्य		27
योग दिवस के कार्यक्रम		28
शिव को विशेष प्रिय सावन के सोमवार	एफ.सी. भाटिया	33

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

भगवा रंग से इतनी चिढ़ क्यों!

हाल ही में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्य के गृह सचिव को आदेश दिया है कि वह इस बात की जांच करके बताएं कि लोग अपने घरों की छतों को गेरुआ या लाल रंग से क्यों रंग रहे हैं! ममता का कहना है कि नीला-सफेद राज्य का रंग है। इसके बाद भी लोग नीला-सफेद रंग को क्यों नहीं अपना रहे हैं! ममता का यह भी कहना है कि लोग कपड़े अपनी पसंद के पहनें, घर भी पसंद के अनुसार बनाएं, लेकिन उसे गेरुआ या लाल रंग से न रंगें।

यह गजब बात है कि अब पश्चिम बंगाल के लोग अपनी पसंद के रंग भी घरों में प्रयोग नहीं कर सकते हैं! ममता सरकारी भवनों में तो नीला-सफेद रंग लगवा सकती हैं, लेकिन निजी घरों में रंग कौन-सा लगे, यह तय करना तो उनका काम नहीं है। इसके बाद भी वे इस बात की जांच करवा रही हैं। यह सरासर गलत बात है। कहा जा रहा है कि ममता ने गेरुआ रंग की जांच का आदेश इसलिए दिया है कि वे पश्चिम बंगाल में भाजपा के बढ़ते मत प्रतिशत से बेहद खफा हैं। बता दें कि भाजपा के झंडे में केसरिया (जिसे भगवा, गेरुआ या नारंगी रंग भी कह सकते हैं) रंग है। शायद इसलिए ममता को लग रहा हो कि घरों में गेरुआ रंग के होने से भाजपा का प्रचार हो रहा है।

राजनीति की ऐसी गिरावट बहुत ही दुखद है। वोट बैंक के लालच में ममता उस भगवा का अपमान कर रही हैं, जिसे त्याग और भारतीय संस्कृति का प्रतीक माना गया है। गेरुआ रंग इस बात की घोषणा है कि जीवन में एक नया प्रकाश आ गया है। प्रातः जब भगवान भास्कर निकलते हैं, तो उनकी किरणों का रंग केसरिया यानी गेरुआ होता है। यह रंग त्याग का प्रतीक है। इसलिए हमारे साधु-संत गेरुआ वस्त्र धारण करते हैं। साधु-संन्यासी बनना कोई आसान काम नहीं होता है। अपने घर-द्वार, मोह-माया, सगे-संबंधी, सब कुछ छोड़ना पड़ता है। इससे बड़ा त्याग क्या हो सकता है।

> **वोट बैंक के लालच में ममता बनर्जी उस भगवा का अपमान कर रही हैं, जिसे त्याग और भारतीय संस्कृति का प्रतीक माना गया है। गेरुआ रंग इस बात की घोषणा है कि जीवन में एक नया प्रकाश आ गया है। प्रातः जब भगवान भास्कर निकलते हैं, तो उनकी किरणों का रंग केसरिया यानी गेरुआ होता है। यह रंग त्याग का प्रतीक है। इसलिए हमारे साधु-संत गेरुआ वस्त्र धारण करते हैं।**

हमारे शरीर में उपस्थित सातों चक्रों का अपना एक अलग रंग है। भगवा या गेरुआ रंग आज्ञा चक्र का रंग है और आज्ञा ज्ञान-प्राप्ति का सूचक है। तो जो लोग आध्यात्मिक पथ पर होते हैं, वे उच्चतम चक्र तक पहुंचना चाहते हैं इसलिए वे इस रंग को पहनते हैं।

नारंगी रंग पकने का भी सूचक है। प्रकृति में जो भी चीज पकती है, वह आमतौर पर नारंगी रंग की हो जाती है। यानी अगर कोई व्यक्ति परिपक्वता और समझदारी के एक विशेष स्तर तक पहुंच गया है तो उसका अर्थ है कि उसका रंग नारंगी हो गया। नारंगी रंग एक नई शुरुआत और परिपक्वता का सूचक है। यह आपके आभामंडल और आज्ञा चक्र से भी जुड़ा है, यह ज्ञान का भी सूचक है और यह भी बताता है कि इस इंसान ने एक नई दृष्टि विकसित कर ली है। जिसने नई दृष्टि विकसित कर ली, उसके लिए भी और जो विकसित करना चाहता है, उसके लिए भी नारंगी रंग पहनना अच्छा है।

केसरिया, भगवा, गेरुआ या नारंगी रंग भारतीय संस्कृति का भी प्रतीक है। इसके साथ ही केसरिया को बलिदान और साहस का प्रतीक माना जाता है। इसलिए केसरिया को हमारे तिरंगे में सबसे ऊपर स्थान मिला है। यह रंग देश के प्रति हिम्मत और निस्वार्थ भावनाओं को दिखाता है। इसलिए इसका विरोध नहीं होना चाहिए। लेकिन सत्य तो यह है कि विरोध हो रहा है। इसलिए ममता बनर्जी से यह पूछा जाना चाहिए कि क्या आप तिरंगे के केसरिया रंग का भी विरोध करेंगी! ❐

ऐसे बना भगवा ध्वज 'गुरु'

■ आचार्य मायाराम पतंग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में भगवा ध्वज को गुरु माना गया है। संघ के स्वयंसेवक वर्ष में एक बार गुरु दक्षिणा करते हैं। यह दक्षिणा गुरु यानी भगवा ध्वज को समर्पित की जाती है। इसी दक्षिणा से संघ की गतिविधियां चलती हैं। यह कैसे और क्यों हुआ, इसके पीछे कई कारण हैं। ऐसा माना जाता है कि संघ के संस्थापक और आद्य सरसंघचालक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी को संघ कार्य के विस्तार हेतु जब धन की आवश्यकता अनुभव हुई तो उन्होंने यह विचार कुछ स्वयंसेवकों के समक्ष रखा। अनेक सुझाव आए। ऐसे दानदाताओं के नाम भी लिए गए, जो संघ के प्रचार-प्रसार का व्यय अकेले वहन कर सकते थे। लेकिन वे इस सत्य को समझ रहे थे कि जो हमें दान देगा वह भी संघ से कुछ अपेक्षा रखेगा। संभव है दबाव डालकर कुछ अनचाहा भी करवाना चाहे। अत: उन्होंने स्पष्ट किया कि हमें अपने कार्य बढ़ाने के लिए चन्दे से नहीं, अपितु समर्पण भाव से धन एकत्र करना है। तब उन्होंने कहा कि हम भी संघ में गुरु पूजा करके दक्षिणा भाव से अर्पित धन एकत्र करेंगे। उसी धन का उपयोग संघ कार्य के विस्तार में किया जाएगा।

एक बार तो सभी स्वयंसेवकों का मन खिल उठा। उन्होंने सोचा- अब हम डॉ. साहेब को गुरु मानकर उनकी पूजा करेंगे। परन्तु डॉ. साहेब ने तो एक और विचार स्पष्ट कर दिया। उन्होंने समझाया कि व्यक्ति गुरु किसी के व्यक्तिगत गुरु हो सकते हैं। एक संस्था के, समाज के या संपूर्ण राष्ट्र के गुरु नहीं हो सकते। कोई भी व्यक्ति किसी उच्चतम स्थान पर पहुँच कर भी पतनोन्मुख हो सकता है। मन में दुर्बलता आ सकती है। अपने गुरु पद का अभिमान पनप सकता है। अत: गुरु स्थान पर हम किसी व्यक्ति को नहीं प्रतीक को सम्मानित करेंगे।

फिर अनेक सुझाव आए। एक सुझाव आया हम शक्ति का पूजन और एकत्रीकरण करते हैं तो क्यों ना माँ काली या दुर्गा माता को गुरु स्थान पर स्वीकार करें। किसी ने सुझाव रखा कि हम सब स्वयंसेवक हैं। सेवा के क्षेत्र में संसार भर में हनुमान जी से बढ़कर कोई नहीं। अत: श्री हनुमान जी महाराज को गुरु स्थान पर स्वीकार करें। तब तक आर्य समाज का प्रचार उभार पर था। पढ़े-लिखे लोग आर्य समाज के सिद्धांतों से प्रभावित थे। हनुमान जी या दुर्गा माता को गुरु मानेंगे तो उनकी मूर्ति की पूजा करनी होगी। अत: आर्य समाज में आस्था रखने वाले लोग तो स्वयंसेवक बनेंगे ही नहीं।

इसके बाद निर्णय हुआ कि भगवा ध्वज ही गुरु मानने के योग्य है। यह सर्वमान्य है। भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। आदि काल से समाज में सम्मान प्राप्त है। भगवा त्याग, वीरता, प्रेम एवं भक्ति की प्रेरणा देने वाला है। राष्ट्रीय एकता के लिए इससे बढ़कर कुछ और नहीं हो सकता। इसका कटाव दो लहरों तथा दो लपटों को दर्शाता है जो यज्ञ की अग्नि का स्मरण दिलाता है। सूर्योदय तथा अग्नि का यह अरुण वर्ण उन्नति एवं प्रकाश का मार्ग दिखाता है। संसार के समस्त स्वार्थों का त्याग कर संन्यासी महात्मा भगवा धारण करते हैं। सारा समाज उन्हें पूजनीय मानता है। अत: भगवा ध्वज को गुरु स्थान पर सम्मानित किया गया। आज उसी भगवा ध्वज के समक्ष संघ के स्वयंसेवक गुरुदक्षिणा करते हैं। यही धन संघ के पावन कार्य के प्रसार में लगता है। ❐

बंदऊ गुरु पद कंज

■ डॉ. प्रणव पंड्या

गुरुचरणों की भक्ति में तप-साधना की पूर्णता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी काव्य व्यंजना में इसे तात्त्विक अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने रामचरित का गान करने से पहले सद्गुरु चरणों का चरित बखान किया है। इसका गुरुभक्ति में लीन साधकों के लिए विशेष महत्त्व है। गुरुचरण चरित के मंत्रद्रष्टा महाकवि तुलसी इसका प्रारंभ करते हुए कहते हैं-

बंदऊ गुरु पद कंज,
कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज,
जासु वचन रविकर निकर॥

मैं सद्गुरु के चरण कमल की वन्दना करता हूँ। मेरे गुरुदेव कृपा के सागर और नर रूप में स्वयं नारायण हैं। उनके वचन महामोह के घने अँधेरे का नाश करने के लिए सूर्य किरणों के समूह हैं।

गोस्वामी जी की इन काव्य पंक्तियों में बड़ी स्पष्टोक्ति है कि सद्गुरु मनुष्य देहधारी होते हुए भी सामान्य मनुष्य नहीं हैं। वह नर रूप में नारायण हैं। जो उनके प्रति इसी गहरी श्रद्धा के साथ स्वयं को अर्पित करता है, उसे ही उनके वचनों से तत्त्वबोध होता है। उसके जीवन में सद्गुरु के वचन सूर्य की किरणों की तरह अवतरित होते हैं और महामोह के घने अँधेरे को पल भर में नष्ट कर डालते हैं। महाकवि आगे कहते हैं कि गुरुदेव भगवान् के चरण की ही नहीं, उनके चरणों की धूलि की भी भारी महत्ता है। वह उसकी भी वंदना करते हैं-

बंदऊ गुरुपद पदुम परागा,
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥
अमिय मूरिमय चूरन चारू।
समन सकल भवरुज परिवारू॥

सद्गुरु के चरण कमलों की धूलि की मैं वंदना करता हूँ। गोस्वामी जी का कहना है कि यह चरणरज साधारण नहीं है। इसको श्रद्धाभाव से धारण किया जाए, तो इससे जीवन में कई तत्त्व प्रकट होते हैं। इनमें से पहला तत्त्व सुरुचि है। वर्तमान में हममें से प्रायः सभी कुरुचि से घिरे हैं। हमारी रुचियाँ मोह और इंद्रिय विषयों की ओर हैं। सुरुचि के जाग्रत् होते ही उच्चस्तरीय जीवन के प्रति

जाग्रति होती है। दूसरा तत्त्व है-सुवास। गुरु चरणों की धूलि का महत्त्व समझ में आते ही जीवन सुगंधित हो जाता है। वासनाओं व कामनाओं की मलिन, दूषित दुर्गंध हटने-मिटने लगती है। इसके साथ ही तीसरा तत्त्व प्रकट होता है- सरसता का, संवेदना का। निष्ठुरता विलीन होती है, संवेदना जाग्रत होती है। इन सारे तत्त्वों के साथ विकसित होता है, अनुराग, अपने गुरुदेव के प्रति। जीवन में गुरुभक्ति तरंगित होती है।

गुरु चरणों की यह धूलि अमरमूल या संजीवनी बूटी का चूर्ण है। इससे समस्त भवरोग अपने पूरे परिवार के साथ नष्ट हो जाते हैं। यह चरणरज महापुण्यरूपी शिव के शरीर पर शोभित होने वाली पवित्र विभूति है। इससे जीवन में सुन्दर कल्याण और आनन्द प्रकट होते हैं। यह गुरुचरणों की रज गुरु भक्तों के मन रूपी दर्पण के मैल को दूर करने वाली है। इसे धारण करने से सभी सद्गुण अपने आप ही वश में हो जाते हैं।

महाकवि आगे कहते हैं-

श्री गुरु पद नख मनि गन जोति।
सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती॥
दलन मोहतम सो सप्रकासू।
बड़े भाग उर आवइ जासू॥

सद्गुरु के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान हैं। इनके स्मरण से हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। गुरुदेव चरणों के स्मरण-ध्यान से साधना जगत् के महासत्य का बड़े ही सहज ढंग से साक्षात्कार हो जाता है। इससे हृदय में जो दिव्य दृष्टि उत्पन्न होती है, उससे साधक के जीवन में एक अपूर्व रूपांतरण होता है। जीवन का सारा अंधकार प्रकाश में परिवर्तित-रूपांतरित हो जाता है। बड़े भाग्यशाली होते हैं वे, जो इस रूपान्तरण की अनुभूति प्राप्त करते हैं। सद्गुरु के चरणों का ध्यान जब हृदय में प्रगाढ़ होता है, तो हृदय के निर्मल नेत्र खुल जाते हैं। संसार की महारात्रि-कालरात्रि, विलीन-विसर्जित हो जाती है। उसके दुःख दोष भी मिट जाते हैं। हृदय के निर्मल नेत्रों के खुलने से ईश्वर तत्त्व का, रामचरित या परमात्म तत्त्व का बोध हो जाता है। इसमें जहाँ-जिस जगह मणि-माणिक के रत्न भंडार गुप्त पड़े हैं, सबके सब नजर आने लगते हैं। सद्गुरु चरणों की कृपा से उलझी जीवन की पहेली सुलझ जाती है। मानव जीवन का रहस्य उद्घाटित-उजागर हो जाता है। गुरुचरणों के ध्यान से उपजी दिव्यदृष्टि का प्रभाव बताते हुए गोस्वामी जी महाराज की काव्य पंक्तियाँ हैं-

गुरु चरणों की यह धूलि अमरमूल या संजीवनी बूटी का चूर्ण है। इससे समस्त भवरोग अपने पूरे परिवार के साथ नष्ट हो जाते हैं। यह चरणरज महापुण्यरूपी शिव के शरीर पर शोभित होने वाली पवित्र विभूति है। इससे जीवन में सुन्दर कल्याण और आनन्द प्रकट होते हैं।

जथा सुअंजन अंजि दृग
साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखत सैल बन,
भूतल भूमि निधान॥

गुरुपद रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन॥

गुरुचरणों की रज को यानि कि गुरुचरणों से निकल रही तप-तेज की किरणों का अपनी आँखों में अंजन लगाने से सारे दृष्टि दोष नष्ट हो जाते हैं। सामान्य क्रम में साधारण आँखों से सभी को सामान्य रूप से दिखता ही है। फिर भी प्रायः सभी की विवेक दृष्टि दूषित होती है। सत् और असत् का भेद समझ में नहीं आता। जीवन की सही राहें समझ नहीं आतीं। यह दृष्टिदोष सद्गुरु के चरणों की धूलि से अर्थात् उनके तप-कणों के प्रसाद से ही ठीक होता है और तब साधक को बड़ी ही अद्भुत दृष्टि का वरदान मिलता है।

गोस्वामी जी कहते हैं कि कुछ ऐसा होता है, जैसे साधक ने अपनी आँखों में सिद्धांजन लगा लिया हो। यह सिद्धांजन नाथ योगियों की तांत्रिक परंपरा में तैयार किया जाता है। यह एक तरह का आँखों में लगाया जाने वाला काजल है। इसे लगाने से पर्वत, वन और पृथ्वी में गड़े गुप्त खजाने साफ-साफ नजर आते लगते हैं। गुरु चरणों के तत्त्वद्रष्टा महाकवि तुलसी कहते हैं कि ठीक ऐसा ही होता है, गुरुचरणों के झरने वाले तप-तेज को अपनी आँखों में लगा लेने पर। इससे दिव्य दृष्टि का वरदान मिलता है कि संसार की ओट में छिपा हुआ ईश्वर तत्त्व बड़ा ही साफ नजर आने लगता है। गुरुचरणों की कृपा से तत्त्वज्ञान, ब्रह्मतादात्म्य, ईश्वर कृपा सभी कुछ सुलभ हो जाती है। हममें से हर एक के लिए यह गुरुपूर्णिमा, गुरुचरणों की इसी कृपा की अनुभूति का पर्व है। ❐

(लेखक अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख हैं)

गुरु देते हैं जीवन का ज्ञान

■ मुरारी बापू

हमारे लिए हर पूर्णिमा एक उत्सव है। आषाढ़ पूर्णिमा को हम गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाते हैं जब मेघ भी रोशनी से भर जाते हैं। गुरु को प्राय: लोग शिक्षक समझ लेते हैं। लेकिन वह शिक्षक से कुछ ज्यादा है। शिक्षक वह है जो हमें किसी एक विषय की शिक्षा देता है, उसमें पारंगत बनाता है। और गुरु हमें जीवन का ज्ञान देता है, जीवन का उद्देश्य बताता है। हम लगन से, मेहनत से शिक्षा हासिल कर सकते हैं, करते ही हैं, लेकिन जब गुरु के पास जाते हैं तो उनसे ज्ञान केवल और केवल समर्पण से ही मिल सकता है। वहां श्रम, कौशल और बुद्धि का अतिशय प्रयोग हमें अपात्र ही बनाएगा। दरअसल, शिक्षक एक व्यक्ति है, जबकि गुरु कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि समष्टि की ऊर्जा व ज्ञान की अभिव्यक्ति है। गुरु एक ही तत्व है, एक ही ऊर्जा है जो अलग-अलग समय पर अलग-अलग रूप धारण कर संसार में हमें यह बताने आती है कि हमारे यहां होने का असल मकसद क्या है, हमारा अस्तित्व क्यों है। गुरु हमें बताता है कि हम संसार को और सुंदर बनाने के लिए आए हैं। वह हममें पूरी मानवता की सेवा, मातृभूमि और संपूर्ण जगत के प्रति प्रेम, सबके प्रति करुणा का भाव भरता है और हमारे भीतर के प्रकाश से, ज्ञान से हमारा परिचय कराता है।

एक प्रकाशित व्यक्तित्व के सान्निध्य में शिष्य तो शिष्य, दुर्जन आ जाए तो उसका तक कल्याण हो जाता है। अंधेरी गुफा में जब मोमबत्ती का प्रकाश होता है तो अंधेरे का नाश नहीं होता, बल्कि अंधेरा स्वयं प्रकाश हो जाता है। उसी तरह सत्पुरुषों के संग में दुर्जनों का नाश नहीं होता, बल्कि वे स्वयं सत्पुरुष बन जाते हैं। मैं कोई गुरु नहीं हूं, आपकी ही तरह पथिक हूं। मेरी यात्रा कुछ ज्यादा हो गई है, इसलिए आप मेरे अनुभवों से कुछ लाभ ले सकते हैं। हम साथ-साथ यात्रा करेंगे। आइए, पहले श्रम और विश्राम

को समझते हैं, उसके बाद सत्य की चर्चा करेंगे। ऋषि-मुनियों ने कहा कि बिना श्रम के विश्राम को महसूस नहीं किया जा सकता है। जब थक जाओगे, तभी मूल में जाओगे। आदमी का चिंतन रोज नया होना चाहिए। शास्त्र का रोज नया पट होता है। समय के साथ लोगों को संशोधित होते रहना चाहिए। इस कलिकाल में नौ चीजों से प्रभु की भक्ति की जा सकती है। योग, यज्ञ, जप, तप, व्रत, पूजा, राम नाम सुमिरन, राम नाम गायन और राम नाथ श्रवण। और कोई साधन नहीं। प्रथम छह साधन में श्रम है। कहीं विश्राम नहीं है, पर श्रम के बिना भी विश्राम अधूरा है।

सभी साधन वृक्ष हैं। जब वृक्ष होंगे तो फल अवश्य होंगे। राम का नाम स्मरण करो, स्मृति में रखो, गाने का मन हो तो गाओ और सुनते रहो। कलिकाल में भक्ति का सबसे सरल सुलभ उपाय यही है। आज दुनिया उदासी और घृणा नहीं चाहती। हमें किसी की निंदा या स्पर्धा नहीं, बल्कि अपना कर्म करना चाहिए। किसी की निंदा नहीं करना भी पूजा है। प्रेम योग से परस्पर जुड़े रहें, यही जमाने की मांग है। सत्य, प्रेम व करुणा कभी बदलते नहीं हैं। दुनिया में सबसे अच्छी दवा है खुश रहना। इससे शरीर को अच्छी औषधि और आरोग्यता मिलती है। यह निरोगी होने की निशानी भी है।

प्रसन्नता जिसके साथ रहती है, वह तेज में जीता है। इसलिए साधारण व्यक्ति के लिए प्रसन्नता हासिल करना बड़ा ही मुश्किल होता है, जबकि यह सबकी जागीर है। जब तक विकार है, विश्राम संभव ही नहीं। अविकार की भूमिका विश्राम का स्वरूप या कहें कि विश्राम की पहचान है। प्रेम ही इस भवसागर से पार उतारने वाला एकमात्र उपाय है। प्रेमी बैरागी होता है, जिससे आप प्रेम करते हैं, उस पर न्योछावर हो जाते हैं। त्याग और वैराग्य सिखाना नहीं पड़ता। प्रेम की उपलब्धि ही वैराग्य है। जिन लोगों ने प्रेम किया है, उन्हें वैराग्य लाना नहीं पड़ा। जिन लोगों ने केवल ज्ञान की चर्चा की, उनको वैराग्य ग्रहण करना पड़ा, त्यागी होना पड़ा, वैराग्य के सोपान चढ़ने पड़े। प्रेम में वैराग्य निर्माण करने की शक्ति है। भक्ति का अर्थ है जिसको तुम प्रेम करते हो उसकी इच्छानुकूल रहो, यही भक्ति है।

एक प्रकाशित व्यक्तित्व के सान्निध्य में शिष्य तो शिष्य, दुर्जन आ जाए तो उसका तक कल्याण हो जाता है। अंधेरी गुफा में जब मोमबत्ती का प्रकाश होता है तो अंधेरे का नाश नहीं होता, बल्कि अंधेरा स्वयं प्रकाश हो जाता है। उसी तरह सत्पुरुषों के संग में दुर्जनों का नाश नहीं होता, बल्कि वे स्वयं सत्पुरुष बन जाते हैं। मैं कोई गुरु नहीं हूं, आपकी ही तरह पथिक हूं।

नौ रसों में निहित है सत्य

सत्य के नौ रस हैं। सत्यमेव जयते है, पर सत्य को जय और विजय के मापदंड पर नहीं रखा जा सकता। सत्य के मार्ग पर विजेता वही बन सकता है जो हारने की क्षमता रखता है। विजेता बनने की लालसा सत्य में बाधक बन सकती है। शांति सत्य का एक और रस है और सत्य शांति में रुचि रखता है, अशांति में नहीं। जिस प्रकार कवि कविता लिखना शुरू करता है, उसे शांति की जरूरत होती है और कविता पढ़ने के बाद भी उसे शांति की अनुभूति होती है। अगर किसी धार्मिक ग्रंथ का स्वाध्याय करते हुए आपकी आंखों में आंसू आ जाएं तो स्वाध्याय करना छोड़ दो क्योंकि आपको उस स्वाध्याय का प्रतिफल मिल गया है।

हम अपना सत्य दूसरों पर थोपने का प्रयास करेंगे तो इससे भयानकता उत्पन्न होती है। अद्‌भुतता रस भी सत्य का एक रूप है। जो व्यक्ति सत्य मार्ग पर चलता है उसे यह कहकर संबोधित करते हैं कि हमारे बीच विचरण करने वाला। किसी को सबके सामने यह कहना कि तुम बहुत खराब हो, तुम में बुराइयां हैं तो इस सत्य के परिणाम वीभत्स हो सकते हैं। यही वीभत्स रस है। रौद्र रस भी सत्य का रूप है, लेकिन इसे ज्यादा समय तक सहन नहीं किया जा सकता। शब्द रूपी आभूषणों से अलंकृत कर सत्य को उजागर करना श्रृंगार रस है। राम सत्य है, रामायण सत्य है, पर तुलसीदास ने जिस तरह से शब्दों के श्रृंगार से उसे प्रस्तुत किया, वह श्रृंगार रस का उदाहरण है। सत्य के मार्ग पर चलने का साहस ही वीरता है, वही वीर रस है। जिस सत्य के उपासक के सत्य को लोग नहीं पहचानते हैं, वह उसे प्रतिपादित करने की बजाय चुपचाप आंसू बहाता है, यह करुण रस है। ❐

(पांचजन्य से साभार)

कृतज्ञता एवं श्रद्धा समर्पण का पर्व

■ सुधांशु जी महाराज

हम सब मनुष्यों के जीवन निर्माण में गुरुओं की अहम भूमिका होती है। भारत जैसे देश में तो गुरु पूर्णिमा अपने आध्यात्मिक एवं अकादमिक जगत में गुरुओं के प्रति निष्ठा, सम्मान, श्रद्धा एवं समर्पण का भाव प्रकट करने के लिए मनाया जाने वाला पर्व है। ऐसा माना जाता है कि जिन गुरुओं ने हमें गढ़ने में अपना योगदान दिया है, उनके प्रति हमें कृतज्ञता का भाव बनाए रखना चाहिए। कहा जाता है जीवन में गुरु का होना महत्वपूर्ण है। गुरु को भगवान से भी बड़ा माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार, गुरु दो शब्दों से मिलकर बना है। 'गु' से तात्पर्य अंधकार और अज्ञान से है तथा 'रु' से तात्पर्य दूर करना या हटाना। हमारे जीवन में अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के लिए गुरु का होना जरूरी है। हिंदुओ की परंपरा के अनुसार आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार गुरु पूर्णिमा को महाभारत के रचयिता वेदव्यास का जन्म दिवस माना जाता है। उनके सम्मान में इस दिन को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। गुरु पूर्णिमा के दिन ही महर्षि वेदव्यास ने चारों वेद की रचना की थी और इसी कारण से उनका नाम वेद व्यास पड़ा। भारत में प्राचीनकाल से ही गुरुओं की भूमिका काफी अहम रही है। चाहे प्राचीन कालीन सभ्यता हो या आधुनिक दौर, समाज के निर्माण में गुरुओं की भूमिका को अहम माना गया है। अपने दोहे में संत कबीरदास ने गुरुजनों के महत्व को श्रेष्ठ दर्जा दिया है।वे लिखते हैं-

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु अपने, गोविंद दियो बताए।

जब गुरु और गोविंद (भगवान) एक साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करना चाहिए-गुरु को या गोविंद को?

फिर अगली पंक्ति में उसका जवाब देते हैं। वे लिखते हैं कि ऐसी स्थिति हो तो गुरु के चरणों में प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि उनके ज्ञान से ही आपको गोविंद के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। कबीरदास ने गुरु की महिमा को एक दोहे के माध्यम से समझाया है। वे लिखते हैं-

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष।
गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष।।

इस दोहे में कबीरदास ने आम लोगों से कहा है कि गुरु के बिना ज्ञान का मिलना असंभव है। जब तक गुरु की कृपा प्राप्त नहीं होती, तब तक कोई भी मनुष्य अज्ञान रूपी अधंकार में भटकता हुआ माया मोह के बंधनों में बंधा रहता है, उसे मोक्ष (मोष) नहीं मिलता। गुरु के बिना उसे सत्य और असत्य के भेद का पता नहीं चलता, उचित और अनुचित का ज्ञान नहीं होता।

मान्यता है कि गुरु एक भगवान के समान होता है। गुरु को भगवान से ऊपर का दर्जा दिया जाता है। सनातन धर्म को मानने वाले लोग गुरु पूर्णिमा के दिन ही अपने गुरु का आशीर्वाद लेते हैं और गुरु भी उन्हें दीर्घायु के लिए आशीर्वाद देते हैं। धार्मिक ग्रंथों के मुताबिक आषाढ़ माह के दिन गुरु पूर्णिमा पर्व के रूप में मनाने की शुरुआत हजारों वर्ष पूर्व महर्षि वेदव्यास ने की थी। सनातन धर्म में महर्षि व्यास को भगवान का रूप माना जाता है। बाल्यावस्था से ही महर्षि वेदव्यास को अध्यात्म में गहरी रुचि थी। कहा जाता है आषाढ़ माह की पूर्णिमा तिथि को ही महर्षि वेदव्यास ने अपने शिष्य और ऋषि मुनियों को श्रीमद्भागवत पुराण का ज्ञान दिया था। तभी से महर्षि व्यास के शिष्यों ने इस दिन को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाने की परंपरा शुरू की। आज भी यह परंपरा निभाई जाती है।

धार्मिक शास्त्रों के मुताबिक गुरु को देवताओं से भी ऊंचा स्थान प्राप्त है। स्वयं देवाधिदेव महादेव ने भी कहा है 'गुरुर्देवो गुरुर्धर्मो, गुरौ निष्ठा परं तपः। गुरोः परतरं नास्ति, त्रिवारं कथयामि ते।।'

अर्थातः-गुरु ही सब कुछ हैं गुरु में निष्ठा ही परम धर्म है। इस संसार में मनुष्यों के साथ देवताओं को भी गुरु की आवश्यकता पड़ती है। गुरु को लेकर एक कहावत भी कही जाती है- 'हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर'। अर्थात् जब भगवान रुठते हैं तो गुरु की शरण मिलती है और जब गुरु रुठ जाए तो कहीं भी शरण नहीं मिलती। इसलिए जीवन में गुरु का होना बहुत महत्वपूर्ण है। ❐

(लेखक विश्व जागृति मिशन के संस्थापक हैं)

सफलता की सीढ़ी चढ़ती बबीता

■ बबीता कुमारी (सूरत)

मैं बबीता बिहार से 2016 में दिल्ली आई। किसी पास के रिश्तेदार ने बताया था कि दिल्ली में आमदनी के अच्छे साधन हैं और वे हमारे पति की अच्छी नौकरी भी लगवा देगा। जो की उसने किया भी। किंतु घर पर केवल हम दो लोग ही थे। पति के काम पर चले जाने के बाद, मैं घर पर बहुत समय खाली ही रहती थी। कुछ दिनों तो यूं ही चलता रहा, पर मैंने देखा की पड़ोस की एक दीदी रोज दिन में 2:00 बजे कहीं जाती थी और 5:30 बजे तक वापस आती थी। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि वे सेवा भारती के केंद्र पर सिलाई सीखने जाती थी। तो वह दिन था, जो कि मेरी जिंदगी में बड़े बदलाव लाने के लिए आया था। मैं अपने आप को रोक नहीं पाई और अगले ही दिन सुबह उठकर जल्दी-जल्दी सारा काम कर, मैं सेवा भारती केंद्र पर जा पहुंची। जो की शकूरपुर आनंदवास में था। शिक्षिका जी से बात करने के बाद मैंने 2017 में अगले ही दिन, सहायता राशि जमा कर दी और केंद्र पर रोज जाकर सिलाई सीखना आरंभ किया। मेरी शिक्षिका रेनू जी का भी मै आभार व्यक्त करूंगी। जिनके साथ रह कर मैने पूरे मन लगाकर एक साल तक सिलाई का कोर्स पूरा किया और परीक्षा दे वहां से प्रमाण पत्र भी अर्जित किया। साथ-साथ घर पर भी मैं पड़ोसियों के द्वारा दिया गया कुछ-कुछ सिलाई का काम करती रही। उससे मेरा हाथ धीरे-धीरे सिलाई हेतु साफ होता गया।

2018 में महिला समिति की मंत्री श्रीमती दीप्ति जी से मेरा मिलना हुआ और मैंने उन्हें सेवा भारती में शिक्षिका के रूप में अपनी सेवा देने का आग्रह किया। किंतु सिलाई में कोई खाली स्थान न होने की वजह से मैं काम नहीं कर पाई। किंतु उनके पूछने पर मैंने उन्हें बताया कि मैं बिहार से उच्च शिक्षा प्राप्त एक ग्रेजुएट हूं, तो उन्होंने मुझे बालवाड़ी में शिक्षिका के रूप में रख लिया। वहां पर मैंने कार्यकर्ताओं के सानिध्य में रहकर काफी कुछ सीखा। पूरा मन लगाकर कार्य किया और 2 साल तक ए ब्लॉक केंद्र में रहकर पुष्पा दीदी के साथ, अपने देश के भविष्य को संवारने में लग गई। उसके बाद आया करोना का वह समय, जिससे हम अपने जीवन में भूलना भी चाहे तो भूल ना पाएंगे। जब सब कुछ बंद था। तो घर को चलाना कठिन था। कुछ दिन जैसे तैसे बीते, पर फिर दिन गुजर करना मुश्किल था। तब घर वालों के समझाने पर हम, अपने घर का सामान वहीं केंद्र पर एक कमरे में रखकर, किसी तरह से बस पकड़ कर गांव चले गए। यहां पर भी सब कुछ शहर जैसा ही था, पर गांव में घर की खेती बाड़ी होने की वजह से पेट तो किसी तरह से भर ही जाता था। एक साल जैसे तैसे बीता, सिलाई आने की वजह से गांव में इधर-उधर से कुछ काम आता रहा, जिस से घर चलाने में भी कुछ सहायता हो जाती। धीरे-धीरे करोना की रफ्तार कम हुई और जिंदगी की गाड़ी पटरी पर आ गई। सिलाई के काम करती करती मेरी सिलाई में काफी सुधार आता चला गया। पर पति के पास काम न होने की वजह से घर का माहौल कुछ ठीक ना था। फिर मेरे भाई ने हमें गुजरात के सूरत में आ जाने को कहा। भैया हमारी वहां नौकरी लगवाने में भी मदद कर देंगे। 2022 के आखिरी में हम लोग सूरत चले गए। कुछ समय बाद पति को भी उनकी क्षमता अनुसार, बढ़िया काम मिल गया और मैंने भी थोड़े-थोड़े सिलाई से कुछ पैसे जोड़ रखे थे। तो मैं एक दिन अपने पति से घर पर ही रहकर घर का काम करते-करते अपना एक बुटीक खोलना का आग्रह किया, जिसमें मेरे पति ने सहमति प्रदान की और फरवरी मास में मैंने बूटीक खोल दिया। धीरे-धीरे मुझ को काम मिलता रहा और मैं मन लगाकर सिलाई करती और मेरा काम बढ़ता चला गया। कुछ समय बाद मैंने महीने के 10000 के आसपास कमा लेना शुरू किया। मैं धन्यवाद करती हूं, सेवा भारती का जिसके साथ जुड़कर मेरे जीवन की दिशा बदल गई। बुरे समय को भी मैंने अपने हुनर से एक सु अवसर में बदल दिया। मैं जिंदगी भर आभार व्यक्त करूंगी सेवा भारती परिवार का और उनके कर्तव्य निष्ठ कार्यकर्ताओं का जिनके सहयोग से आज मेरा सपना साकार हुआ। ❐

– धन्यवाद

हनुमान जी बने पुरोहित

■ प्रतिनिधि

सेतुबन्धन का कार्य अपनी पूर्ण गति से आरम्भ हो चुका था। वानर बड़ी-बड़ी शिलाएं और विशाल पेड़ उखाड़ लाते जिन्हें नल एवं नील की देखरेख में पुल निर्माण में प्रयुक्त किया जाता। इधर राम ने अपने मित्रों से कहा, 'मित्रो, मेरी इच्छा है कि इस स्थान पर हम देवाधिदेव शंकर की पूजा करें, यहाँ एक शिवलिंग की स्थापना करें। उनकी विधिवत पूजा करें और उनके आशीर्वाद से हमारी यह सेना लंका की ओर प्रस्थान करे। शिव राम के ईश्वर हैं, रामेश्वर हैं। उनके समान कोई नहीं। वे भक्तवत्सल शिव हैं, त्रिलोकेश हैं, स्वरमयी अनीश्वर हैं, अनघ मृत्युंजय हैं, वे शाश्वत और अव्यय हैं। उनकी कृपा हुई तो हम अवश्य सफल होंगे।'

यह सुन सभी अत्यंत हर्षित हो उठे। तत्काल ही एक शिवलिंग एवं एक मन्दिर का निर्माण किया गया। कपीश्वर सुग्रीव ने सभी दिशाओं में अपने दूत भेजे कि वे अपने साथ ऋषियों-मुनियों को लेकर आएं और शिवलिंग की स्थापना मंत्रोच्चार के साथ हो सके। द्रुतगामी दूतों के मुख से स्वयं श्रीराम के द्वारा शिवलिंग की स्थापना का शुभ समाचार सुन दूर-दूर के ऋषि-मुनि हर्षित होकर सब कुछ छोड़ तत्काल उपस्थित हो गए।

श्रीराम ने इन ऋषियों-मुनियों को साष्टांग प्रणाम किया और निवेदन करते हुए बोले, 'आप सभी ज्ञानीजनों का स्वागत है। कृपया इस वानरसेना का आतिथ्य ग्रहण करें। कल प्रातः शुभ मुहूर्त में शिवलिंग की स्थापना होगी। आप सब ही परमज्ञानी हैं। अतः मुझे पुरोहित्य कर्म के लिए आपमें से किसी एक का चयन करना असम्भव है। आप सबसे निवेदन है कि आप अपने इस समूह में से, जिसे भी योग्य मानें, उसे नियुक्त कर लें।'

अगली प्रातः सारी व्यवस्थाएं यथानुकूल कर दी गई थीं। शिवलिंग उपस्थित था, जिसके एक ओर प्रभु श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण और मित्र सुग्रीव के साथ विराजमान थे। थोड़ी दूर पर समस्त ऋषि और एक ओर वानर सेनापति बैठे थे। बाकी समस्त वानर सेना उचित दूरी बनाये हुए चुपचाप खड़ी थी। राम ने ऋषियों की ओर देखा और प्रतीक्षा की कि उनमें से कोई उठेगा और पुरोहित का स्थान ग्रहण करेगा। जब कोई नहीं उठा, तब राम हाथ जोड़कर बोले, 'हे ऋषियों, क्या आपने से कोई भी मेरा पुरोहित बनने की इच्छा नहीं रखता? क्या मैं इतना अधम हूँ?'

तत्काल ही ऋषियों के मुख से दुखभरी मर्मान्तक आहें निकलीं। एक ऋषि खड़े हुए और बोले, 'हे नरश्रेष्ठ, यह कैसी बात कह रहे हैं आप? अरे आपका पुरोहित बनने से अधिक उत्तम क्या हो सकता है? आपके दर्शन मात्र से, यहां तक कि आपके स्मरण मात्र से सभी दुख क्षण भर में तिरोहित हो जाते हैं। आपसे वार्ता करने से, आपकी दृष्टि के स्पर्श मात्र से मोक्ष की, परमब्रह्म की प्राप्ति होती है। महाभाग, यह तो हम तुच्छ जीवों का परम सौभाग्य है जो आपने हमें इस योग्य समझा कि हम आपके पुरोहित बन सकते हैं।'

'फिर क्या समस्या है? शुभमुहूर्त आ गया है, और आपमें से कोई भी पुरोहित के स्थान पर बैठ नहीं रहा?' 'इसका कारण मात्र इतना है अयोध्यापति कि आपका पुरोहित तो सर्वश्रेष्ठ को ही होना चाहिए। यदि यहाँ मात्र हम ऋषि ही उपस्थित होते तो कदाचित किसी एक को इस शुभकार्य हेतु नियुक्त कर लेते। परंतु यहां एक ऐसे व्यक्ति भी हैं जो हम सभी ऋषियों के कुल ज्ञान से अधिक ज्ञानवान हैं।' लक्ष्मण बोले, 'ऐसा कौन है ऋषिवर?' 'वे जो ऋग्वेद में शिक्षित हैं, जिन्होंने यजुर्वेद का अभ्यास किया है, जो सामवेद के विद्वान हैं, जिन्होंने व्याकरण का स्वाध्याय किया है, जो सतत बोलने पर भी कभी भी अशुद्ध शब्द नहीं बोलते, जिनके सम्भाषण के समय मुख, नेत्र, ललाट, भौंह एवं अन्य अंगों से कोई दोष प्रकट नहीं होता, जिनकी वाणी हृदय में मध्यमारूप से उपस्थित है और कंठ से बैखरी रूप में प्रकट होती है, जो अष्ट सिद्धि और नव निधियों के स्वामी हैं, जो ज्ञान में सबसे आगे हैं, जो भक्ति में समस्त भक्तों से बढ़चढ़कर हैं, जो स्वयं रुद्रावतार है, उन वज्रांगी हनुमान के सम्मुख हम ऋषियों का क्या अस्तित्व है। हे रघुनन्दन, हम समस्त उपस्थित जनों में आपके बताएं कार्य के लिए बस एक ही योग्य व्यक्ति हैं। कृपया उन्हें ही अपना पुरोहित बनाएं।' ❐

गुरु अर्जनदेव महाराज जी और छबील परंपरा

■ वीरेन्द्र गुप्ता (समाजसेवी)

जून माह में निर्जला एकादशी का व्रत रहता है और इस दौरान लोगों को भयंकर गर्मी और लू का सामना करना पड़ता है। इसलिए जगह-जगह ठंडे मीठे पानी की छबील लगाई जाती है, ताकि लोगों को ठंडक मिले और गर्मी से कुछ राहत मिले। यह ठंडे मीठे पानी की छबील क्यों लगाई जाती है, इसके पीछे क्या कारण है। आमजन सिर्फ मीठा ठंडा पानी समझ कर पीते हैं, लेकिन इसके पीछे गुरु महाराज जी का तप त्याग नहीं देखते और न ही जानते हैं। गुरु श्री अर्जनदेव जी महाराज को जिस दिन गर्म तवे पर बिठाया गया, उसी शाम को गुरु जी को वापस जेल में डाल दिया गया। बाहर बहुत सख्त पहरा लगा दिया गया कि कोई भी गुरु जी से ना मिल सके। उस समय चंदू लाहौर का नवाब था जिसके हुकुम से यह सब हुआ था। उसी रात को चंदू की पत्नी, चंदू का पुत्र कर्मचन्द और पुत्रवधू ने अपने सारे जेवरात उतार कर सिपाहियों को दे दिये और उस जगह पहुंच गए जहां गुरु महाराज जी कैद थे।

जब चंदू के परिवार ने गुरु महाराज जी की हालत देखी तो सभी रोने लगे कि इतने बड़े महापुरुष के साथ ऐसा व्यवहार। चंदू की पत्नी ने कहा गुरु जी मैं आपके लिए ठंडे मीठा शरबत लेकर आई हूं, कृपा करके शरबत पी लीजिए। यह कहते हुए शरबत का गिलास गुरु जी के आगे रख दिया। गुरु जी ने मना कर दिया और कहा, हम प्रण कर चुके हैं कि हम चंदू के घर का पानी भी नहीं पियेंगे। यह सुन कर चंदू की पत्नी की आँखें भर आई और बोली, मैंने तो सुना है कि गुरु जी के घर से कोई खाली हाथ नहीं गया।

तब गुरु जी ने वचन दिया कि माता इस मुख से तो मैं तेरा शरबत नहीं पियूंगा। हां, एक समय ऐसा जरूर आएगा जब यह शरबत हजारों लोग पिलाएंगे और लाखों लोग पिएंगे, आपकी सेवा सफल होगी। आज यह छबील लगाई और पिलाई जाती है, यह गुरु अर्जुन देव जी महाराज के वचन हैं। चंदू की पुत्रवधू ने गुरु जी से विनती की कि महाराज कल आपको शहीद कर दिया जायेगा। मेरी आपसे विनती है कि कल जब आप यह शरीर रूपी चोला छोड़ें तो मैं भी अपना शरीर छोड़ दूं। मैं लोगों के ताने नहीं सुन सकती कि वो देखो चंदू की पुत्रवधू जा रही जिसके ससुर ने श्री गुरु अर्जन देव जी को शहीद किया था। अगले दिन जब गुरु जी को शहीद किया गया तो चंदू की पुत्रवधू भी शरीर त्याग गई। यह होता है अपने गुरु के प्रति सच्चा प्यार, गुरु के प्रति श्रद्धा, आस्था। धन्य है चंदू की पुत्रवधू। हमारे गुरुओं ने कितने तप किए, अत्याचार सहे जिसकी कल्पना मात्र से ही हमारी रूह कांपनी शुरू हो जाती है। जिन्होंने यह अत्याचार सहे उन पर क्या बीती होगी। मेरा निवेदन है कि गुरु महाराज जी की शहादत की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने की कृपा करें। ❐

अलग ही माटी के थे सुदर्शन जी

■ प्रतिनिधि

अभी पिछले महीने ही 18 जून को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पंचम सरसंघचालक श्री कुप्. सी. सुदर्शन जी का जन्म दिवस स्वयंसेवकों ने मनाया। 15 सितंबर, 2012 को वे भले ही शारीरिक रूप से इस दुनिया से जा चुके हैं, लेकिन वे आज भी अनगिनत कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। मार्च 2009 में श्री मोहनराव भागवत को छठवाँ सरसंघचालक नियुक्त कर वे स्वेच्छा से पदमुक्त हो गए।

सुदर्शन जी मूलतः तमिलनाडु और कर्नाटक की सीमा पर बसे कुप्पहल्ली (मैसूर) ग्राम के निवासी थे। कन्नड़ परम्परा में सबसे पहले गांव, फिर पिता और फिर अपना नाम बोलते हैं। सुदर्शन जी के पिता श्री सीतारामैया वन-विभाग की नौकरी के कारण अधिकांश समय मध्य प्रदेश में ही रहे और वहीं तत्कालीन मध्य प्रदेश (मौजूदा छत्तीसगढ़) की राजधानी रायपुर जिले में एक ब्राह्मण परिवार में 18 जून, 1931 को श्री सुदर्शन जी का जन्म हुआ। तीन भाई और एक बहिन वाले परिवार में सुदर्शन जी सबसे बड़े थे।

सुदर्शन जी की प्रारंभिक शिक्षा रायपुर, दामोह, मंडला और चंद्रपुर में हुई। महज 9 साल की उम्र में ही उन्होंने पहली बार संघ की शाखा में भाग लिया। उन्होंने वर्ष 1954 में जबलपुर के सागर विश्वविद्यालय (इंजीनिरिंग कालेज) से दूरसंचार विषय (टेलीकाम/टेलीकम्युनिकेशंस) में बी.ई की उपाधि प्राप्त कर 23 साल की उम्र में संघ के प्रचारक निकले। इसके बाद उन्होंने अपना सारा जीवन देश और संगठन को समर्पित कर दिया। सर्वप्रथम उन्हें रायगढ़ भेजा गया। श्री सुदर्शन जी को संघ-क्षेत्र में जो भी दायित्व दिया गया, उसमें अपनी नव-नवीन सोच के आधार पर उन्होंने नये-नये प्रयोग किये। 1969 से 1971 तक उन पर अखिल भारतीय शारीरिक प्रमुख का दायित्व था। इस दौरान ही खड्ग, शूल, छुरिका आदि प्राचीन शस्त्रों के स्थान पर नियुद्ध,

आसन, तथा खेल को संघ शिक्षा वर्गों के शारीरिक पाठ्यक्रम में स्थान मिला। आज तो प्रात:कालीन शाखाओं पर आसन तथा विद्यार्थी शाखाओं पर नियुद्ध एवं खेल का अभ्यास एक सामान्य बात हो गयी है। आपातकाल के अपने बन्दीवास में उन्होंने योगचाप (लेजम) पर नये प्रयोग किये तथा उसके स्वरूप को बिल्कुल बदल डाला। योगचाप की लय और ताल के साथ होने वाले संगीतमय व्यायाम से 15 मिनट में ही शरीर का प्रत्येक जोड़ आनन्द एवं नवस्फूर्ति का अनुभव करता है। 1977 में उनका केन्द्र कोलकाता बनाया गया तथा शारीरिक प्रमुख के साथ-साथ वे पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्र प्रचारक भी रहे। इस दौरान उन्होंने वहाँ की समस्याओं का गहन अध्ययन करने के साथ-साथ बांग्ला और असमिया भाषा पर भी अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया।

बाद में वे मध्य प्रदेश के प्रांत प्रचारक बने। इसके बाद संघ में उन्होंने कई तरह की अहम जिम्मेदारियां संभाली। संघ कार्य में सरसंघचालक की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण है। चौथे सरसंघचालक प्रो. राजेंद्र सिंह को जब लगा कि स्वास्थ्य खराबी के कारण वे अधिक सक्रिय नहीं रह सकते, तो उन्होंने वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से परामर्श कर 10 मार्च, 2000 को अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में श्री सुदर्शन जी को यह जिम्मेदारी सौंप दी। नौ वर्ष बाद सुदर्शन जी ने भी इसी परम्परा को निभाते हुए 21 मार्च, 2009 को तत्कालीन सरकार्यवाह श्री मोहनराव भागवत को छठे सरसंघचालक का कार्यभार सौंप दिया। ❐

श्रद्धांजलि

समाजसेवी और शिक्षाविद् श्रीमती सुन्दर शांता चड्ढा जी 17 मई, 2024 को इस नश्वर संसार से अपनी जीवन लीला समाप्त कर अनंत यात्रा के लिए प्रयाण कर गई। श्रीमती सुन्दर शांता चड्ढा जी का जन्म 25 दिसंबर, 1934 को अविभाजित भारत के रावलपिंडी में हुआ। उनके पिता स्वर्गीय स्वामी दास सूरी सेना में थे। विभाजन के बाद बेंगलुरू में स्थानान्तरित हुए, जहां पर श्रीमती सुन्दर शांता जी ने स्नात की शिक्षा पूरी की। यह उनकी विलक्षण प्रतिभा का ही परिणाम था कि उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में स्कूल एवं कॉलेज दोनों में न केवल पढ़ाई में टॉप किया, बल्कि सह-पाठयचर्या संबंधी गतिविधियां जैसे वाद-विवाद, खेल कूद में भी अव्वल स्थान प्राप्त किया। एक ऐसा विषय (अंग्रेजी) में टॉप किया जिस विषय में उनको कोई ज्ञान नहीं था, जब उन्होंने अपनी शिक्षा बेंगलुरू में आरंभ की थी। अपनी शिक्षा खत्म करके वे दिल्ली आ गईं और अंग्रेजी

की अध्यापिका के पद पर उनकी दिल्ली सरकार में नियुक्ति हुई। दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में सराहनीय कार्य करके अंतत: प्राचार्य के पद से सेवानिवृत हुई।

अपने शिक्षण कार्य के साथ-साथ वे विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में शामिल रहीं। उनहोंने अपना सारा जीवन प्राणीमात्र के परोपकार और सेवा में लगाया। वे सेवा भारती और आर्य समाज से जुड़ी हुई थीं। आर्य समाज, प्रीत विहार में मंत्री के पद को सुशोभित करके उसकी गरिमा बढ़ाई। उनहोंने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के साथ उनके लिए काम किया। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए सेवा भारती के सामूहिक विवाह समारोह कार्यक्रमों में वे भाग लेती थीं और यथाशक्ति दान देती थीं। उन्होंने सेवा भारती के विभिन्न कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन संस्कारों से भी परिपूर्ण था। आपने सेवा भारती एवं आर्य समाज से जुड़ी हुई कई संस्थाएं जैसे तपोवन आश्रम, देहरादून, रीमद दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर दिल्ली आर्य अनाथालय दरियागंज पटौदी हाउस दिल्ली इत्यादि अनेक संस्थाओं को अपनी असीम दान भावना का परिचय देते हुए समाज की अप्रतिम सेवा की। महर्षि दयानन्द के विचारों ने उन्हें प्रभावित एवं प्रेरित किया था और निष्काम होकर परोपकार की भावना से उन्होंने अपने सामाजिक दायित्व को निभाया।

सेवा भारती परिवार श्रीमती सुन्दर शांता चड्ढा जी के आकस्मिक निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त करता है और उनकी आत्मा की सद्गति एवं शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। ❐

राजमाता अहिल्याबाई होलकर

■ आचार्य अनमोल

महारानी अहिल्याबाई होलकर का जन्म 31 मई 1725 को चोंडी गांव (चांदवड़), इंदौर राज्य, मराठा संघ, वर्तमान अहमदनगर (महाराष्ट्र) में हुआ था। अहिल्याबाई के पिता मानकोजी शिंदे एक मामूली किंतु संस्कार वाले आदमी थे। उस समय महिलाएँ स्कूल नहीं जाती थीं, लेकिन अहिल्याबाई के पिता ने उन्हें लिखने-पढ़ने लायक बनाया।

ऐसा कहा जाता है कि वे तब प्रमुखता से उभरीं जब मराठा पेशवा बाजीराव की सेना के कमांडर और मालवा के शासक मल्हार राव होल्कर पुणे जाते समय चंडी में रुके और गाँव के एक मंदिर की सेवा में आठ वर्षीय अहिल्या को देखा। उनकी धर्मपरायणता और चरित्र से प्रभावित होकर, मल्हार के बेटे खांडे राव होलकर ने पेशवा की सलाह पर अहिल्या से विवाह किया। उन्होंने 1733 में खांडे राव से शादी की।

सन 1745 में अहिल्याबाई के पुत्र हुआ और तीन वर्ष बाद एक कन्या। पुत्र का नाम मालेराव और कन्या का नाम मुक्ताबाई रखा। उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने पति के गौरव को जगाया। कुछ ही दिनों में अपने महान पिता के मार्गदर्शन में खाण्डेराव एक अच्छे सिपाही बन गये। मल्हार राव को भी देखकर संतोष होने लगा। पुत्र-वधू अहिल्याबाई को भी वह राजकाज की शिक्षा देते रहते थे। उनकी बुद्धि और चतुराई से वह बहुत प्रसन्न होते थे। अहिल्या कई अभियानों पर खांडे राव के साथ गईं। अपने पूरे वैवाहिक जीवन में उनका पालन-पोषण उनकी सास गौतम बाई ने किया, जिन्हें आज अहिल्या में स्थापित मूल्यों का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने उसे प्रशासन, लेखा और राजनीति में प्रशिक्षित किया और अंततः 1759 में उसे खासगी जागीर सौंप दी।

1754 में, खांडे राव ने अपने पिता मल्हार राव होल्कर के साथ मुगल सम्राट अहमद शाह बहादुर के जनरल मीर बख्शी के समर्थन के अनुरोध पर भरतपुर के जाट राजा सूरज मल के कुम्हेर किले की घेराबंदी की। सूरजमल ने मुगल बादशाह के विद्रोही वजीर सफदर जंग का पक्ष लिया था। खांडे राव युद्ध के दौरान एक खुली पालकी में अपने सैनिकों का निरीक्षण कर रहे थे, तभी जाट सेना द्वारा छोड़ा गया एक

तोप का गोला उन पर लगा, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु के बाद अहिल्याबाई को उनके ससुर ने सती होने से रोक दिया था। अपने पति के निधन के बाद, उन्हें मल्हार राव होलकर द्वारा सैन्य मामलों में प्रशिक्षित किया।

मल्हार राव के निधन के बाद रानी अहिल्याबाई ने राज्य का शासन-भार सम्भाला था। वे मालवा साम्राज्य की मराठा होलकर महारानी थीं। अहिल्याबाई किसी बड़े राज्य की रानी नहीं थीं, लेकिन अपने राज्य काल में उन्होंने जो कुछ किया वह आश्चर्यचकित करने वाला है। वह एक बहादुर योद्धा और कुशल तीरंदाज थीं। उन्होंने कई युद्धों में अपनी सेना का नेतृत्व किया और हाथी पर सवार होकर वीरता के साथ लड़ीं।

रानी अहिल्याबाई ने अपनी मृत्यु पर्यन्त(13 अगस्त सन् 1795) बड़ी कुशलता से राज्य का शासन चलाया। उनकी गणना आदर्श शासकों में की जाती है। अहिल्याबाई एक दार्शनिक रानी, धर्मपारायण स्त्री, हिंदू धर्म को मानने वाली और भगवान शिव की बड़ी भक्त थी। वे अपनी उदारता और प्रजा-वत्सलता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका इकलौता पुत्र मालेराव सन् 1766 ईए में दिवंगत हो गया। तब अहिल्याबाई ने 1767 ईए में तुकोजी होल्कर को सेनापति नियुक्त किया।

विशेष योगदान

रानी अहिल्याबाई ने भारत के भिन्न-भिन्न भागों में अनेक मन्दिरों, धर्मशालाओं का निर्माण कराया था। कलकत्ता से बनारस तक की सड़क बनवाई। बनारस में अन्नपूर्णा का मन्दिर तथा गया में विष्णु मन्दिर उनके बनवाए हुए हैं। इन्होंने घाट बनवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया, मार्ग बनवाए, भूखों के लिए सदाब्रत (अन्नक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ लगवाई, शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन हेतु मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति की। इसके अलावा उन्होंने काशी, गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, द्वारिका, बद्रीनारायण, रामेश्वर, जगन्नाथ पुरी इत्यादि प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों पर मंदिर बनवाए और धर्म शालाएँ खुलवाईं।

शिव जी की भक्त

उनका सारा जीवन कर्तव्य-पालन और परमार्थ की साधना में ही रहा। वे भगवान शिव की बड़ी भक्त थीं। बिना उनके पूजन के मुँह में पानी की बूंद नहीं जाने देती थीं। कहा जाता है कि रानी अहिल्याबाई के स्वप्न में एक बार भगवान शिव आए। इसलिए उन्होंने 1777 में विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया। सारा राज्य उन्होंने शंकर को अर्पित कर रखा था और आप उनकी सेविका बनकर शासन चलाती थीं। उनका पिवार था कि ''संपति सब रघुपति के आहि'' सारी संपत्ति भगवान की है। वे राजाज्ञाओं पर

हस्ताक्षर करते समय अपना नाम नहीं लिखती थीं। नीचे केवल 'श्री शंकर' लिख देती थीं। उनके रुपयों पर शंकर का लिंग और बिल्व पत्र का चित्र अंकित था और पैसों पर नंदी का। उनके बाद में भारतीय स्वराज्य की प्राप्ति तक इंदौर के सिंहासन पर जितने नरेश आए सबकी राजाज्ञाएँ श्रीशंकर आज्ञा के रूप में जारी होती थीं। अहिल्याबाई का रहन-सहन बिल्कुल सादा था। शुद्ध सफेद वस्त्र धारण करती थीं। जेवर आदि कुछ नहीं पहनती थीं। भगवान की पूजा, अच्छे ग्रंथों को सुनना ओर राजकाज आदि में नियमित रहती थीं।

शांति और सुरक्षा की स्थापना

मल्हार राव होल्कर के जीवन काल में ही उनके पुत्र खंडेराव का निधन 1754 ईए में हो गया था। अतः मल्हार राव के निधन के बाद रानी अहिल्याबाई ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ली, राज्य में बड़ी अशांति थी। चोर, डाकू आदि के उपद्रवों से लोग बहुत तंग थे। ऐसी हालत में उन्होंने देखा कि राजा का सबसे पहला कर्तव्य उपद्रव करने वालों को काबू में लाकर प्रजा को निर्भयता और शांति प्रदान करना है। उपद्रवों में भीलों का खास हाथ था। उन्होंने दरबार किया और अपने सारे सरदारों और प्रजा का ध्यान इस ओर दिलाते हुए घोषणा की ''जो वीर पुरुष इन उपद्रवी लोगों को काबू में ले आवेगा, उसके साथ मैं अपनी लड़की मुक्ताबाई की शादी कर दूँगी।''

इस घोषणा को सुनकर यशवंतराव फणसे नामक एक युवक उठा और उसने बड़ी नम्रता से अहिल्याबाई से कहा कि वह यह काम कर सकता है। महारानी बहुत प्रसन्न हुईं। यशवंतराव

इतिहास में अहिल्याबाई

मध्य भारत में इंदौर की अहिल्याबाई का शासनकाल तीस वर्षों तक चला। यह उस काल के रूप में लगभग प्रसिद्ध हो गया है, जिसके दौरान उत्तम व्यवस्था और अच्छी सरकार कायम थी और लोग समृद्ध थे। वह एक बहुत ही सक्षम शासक और संगठनकर्ता थीं, जिनका इस दौरान बहुत सम्मान किया जाता था। उनके जीवनकाल में, और उनकी मृत्यु के बाद कृतज्ञ लोगों द्वारा उन्हें संत माना गया।

– जवाहरलाल नेहरू, द डिस्कवरी ऑफ इंडिया (1946)

तीस वर्षों तक उसके शांति के शासनकाल में, भूमि का आशीर्वाद बढ़ता गया और उसे कठोर और सौम्य, बूढ़े और जवान, हर जीभ से आशीर्वाद मिला।

- जोआना बैली, अंग्रेजी कविता (1849)

अहिल्याबाई की असाधारण क्षमता ने उन्हें अपनी प्रजा और नाना फड़नवीस सहित अन्य मराठा संघियों का सम्मान दिलाया। गंभीर दृष्टि से उसके चरित्र को ध्यान में रखते हुए, वह निश्चित रूप से, अपने सीमित क्षेत्र के भीतर, अब तक के सबसे शुद्ध और सबसे अनुकरणीय शासकों में से एक प्रतीत होती है।

- जॉन मैल्कम, ए मेमॉयर ऑफ सेंट्रल इंडिया

इंदौर में इस महान शासक ने अपने क्षेत्र के सभी लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए प्रोत्साहित किया, व्यापारियों ने अपने बेहतरीन कपड़े तैयार किए, व्यापार फला-फूला, किसान शांति में थे और उत्पीड़न बंद हो गया, क्योंकि रानी के सामने आने वाले प्रत्येक मामले को गंभीरता से निपटाया जाता उनका शासनकाल खुशहाल था और उनकी स्मृति को आज तक गहरी श्रद्धा के साथ संजोया जाता है।

- एनी बेसेंट

मूल कागजात और पत्रों से, यह स्पष्ट हो जाता है कि वह प्रथम श्रेणी की राजनीतिज्ञ थीं, और इसीलिए उन्होंने महादजी शिंदे को अपना समर्थन आसानी से दे दिया था।

-इतिहासकार जुदुनाथ सरकार

अपने काम में लग गए और बहुत थोड़े समय में उन्होंने सारे राज्य में शांति की स्थापना कर दी। महारानी ने बड़ी प्रसन्नता के साथ मुक्ताबाई का विवाह यशवंतराव फणसे से कर दिया। इसके बाद अहिल्याबाई का ध्यान शासन के भीतरी सुधारों की तरफ गया। राज्य में शांति और सुरक्षा की स्थापना होते ही व्यापार-व्यवसाय और कला-कौशल की बढ़ोत्तरी होने लगी और लोगों को ज्ञान की उपासना का अवसर भी मिलने लगा। नर्मदा के तीर पर महेश्वरी उनकी राजधानी थी। वहाँ तरह-तरह के कारीगर आने लगे ओर शीघ्र ही वस्त्र-निर्माण का वह एक सुंदर केंद्र बन गया।

सेनापति के रूप में

मल्हारराव के भाई-बंधुओं में तुकोजीराव होल्कर एक विश्वास पात्र युवक थे। मल्हारराव ने उन्हें भी सदा अपने साथ में रखा था और राजकाज के लिए तैयार कर लिया था। अहिल्याबाई ने इन्हें अपना सेनापति बनाया और चौथ वसूल करने का काम उन्हें सौंप दिया। वैसे तो उम्र में तुकोजीराव होल्कर अहिल्याबाई से बड़े थे, परंतु तुकोजी उन्हें अपनी माता के समान ही मानते थे और राज्य का काम पूरी लगन ओर सच्चाई के साथ करते थे। अहिल्याबाई का उन पर इतना प्रेम था कि वह भी उन्हें पुत्र जैसा मानती थीं। राज्य के कागजों में जहाँ कहीं उनका उल्लेख आता है वहाँ तथा मुहरों में भी 'खंडोजी सुत तुकोजी होल्कर' इस प्रकार कहा गया है।

महिला सशक्तीकरण की पक्षधर

भारतीय संस्कृति में महिलाओं को शक्ति स्वरूपा दुर्गा के समान बताया गया है। ठीक इसी तरह अहिल्याबाई ने स्त्रियों को उनका उचित स्थान दिया। नारी शक्ति का भरपूर उपयोग किया। उन्होंने यह बता दिया कि स्त्री किसी भी स्थिति में पुरुष से कम नहीं है। वे

स्वयं भी पति के साथ रणक्षेत्र में जाया करती थीं। पति के देहान्त के बाद भी वे युद्ध क्षेत्र में उतरती थीं और सेनाओं का नेतृत्व करती थीं। अहिल्याबाई के गद्दी पर बैठने के पहले शासन का ऐसा नियम था कि यदि किसी महिला का पति मर जाए और उसका पुत्र न हो तो उसकी संपूर्ण संपत्ति राजकोष में जमा कर दी जाती थी, परंतु अहिल्या बाई ने इस कानून को बदल दिया और मृतक की विधवा को यह अधिकार दिया कि वह पति द्वारा छोड़ी हुई संपत्ति की वारिस रहेगी और अपनी इच्छानुसार अपने उपयोग में लाए और चाहे तो उसका सुख भोगे या अपनी संपत्ति से जनकल्याण के काम करे।

दान व त्याग के कुछ उदाहरण

एक समय बुन्देलखंड के चन्देरी मुकाम से एक अच्छा 'धोती-जोड़ा' आया था, जो उस समय बहुत प्रसिद्ध हुआ करता था। अहिल्या बाई ने उसे स्वीकार किया। उस समय एक सेविका जो वहां मौजूद थी वह धोती-जोड़े को बड़ी ललचाई नजरों से देख रही थी। अहिल्याबाई ने जब यह देखा तो उस कीमती जोड़े को उस सेविका को दे दिया। इसी प्रकार एक बार उनके दामाद ने पूजा-अर्चना के लिए कुछ बहुमूल्य सामग्री भेजी थी। उस सामान को एक कमजोर भिखारिन जिसका नाम था सिन्दूरी, उसे दे दिया। किसी सेविका ने याद दिलाया कि इस सामान की जरूरत आपको भी है परन्तु उन्होंने यह कहकर सेविका की बात को नकार दिया कि उनके पास और हैं।

महिलाओं के प्रति करुणा

किसी महिला का पैरों पर गिर पड़ना अहिल्या बाई को पसन्द नहीं था। वे तुरंत अपने दोनों हाथों का सहारा देकर उसे उठा लिया करती थीं। उनके सिर पर हाथ फेरतीं और ढाढस बँधाती। रोने वाली स्त्रियों को वे उनके आँसुओं को रोकने के लिए कहतीं और उचित समय पर उनके उपयोग की बात कहतीं। उस समय किसी पुरुष की मौजूदगी को वे अच्छा नहीं समझती थीं। यदि कोई पुरुष किसी कारण मौजूद भी होता तो वे उसे किसी बहाने वहाँ से हट जाने को कह देतीं। इस प्रकार एक महिला की व्यथा, उसकी भावना को एकांत में सुनतीं, समझतीं थीं। यदि कोई कठिनाई या कोई समस्या होती तो उसे हल कर देतीं अथवा उसकी व्यवस्था करवातीं। महिलाओं को एकांत में अपनी बात खुलकर कहने का अधिकार था।

एक बार होल्कर राज्य की दो विधवाएँ अहिल्याबाई के पास आईं, दोनों बड़ी धनवान थीं परन्तु दोनों के कोई सन्तान नहीं थी। वे अहिल्याबाई से प्रभावित थीं। अपनी अपार संपत्ति अहिल्याबाई के चरणों में अर्पित करना चाहती थीं। संपत्ति न्योछावर करने की आज्ञा माँगी, परन्तु उन्होंने उन दोनों को यह कहकर मना कर दिया कि जैसे मैंने अपनी संपत्ति जनकल्याण में लगाई है, उसी प्रकार तुम भी अपनी संपत्ति को जनहित में लगाओ। उन विधवाओं ने ऐसा ही किया और वे धन्य हो गईं।

> **1780 में, मल्हार राव की बहू अहिल्याबाई ने मस्जिद से सटे वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। अहिल्याबाई ने 1780 में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में काशी विश्वनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए धन दिया था, जिसे पहले नष्ट कर दिया गया था और बाद में 1669 में औरंगजेब ने इसे एक मस्जिद में बदल दिया था।**

मृत्यु

राज्य की चिंता का भार और उस पर प्राणों से भी प्यारे लोगों का वियोग। इस सारे शोक-भार को अहिल्याबाई का शरीर अधिक नहीं संभाल सका और 13 अगस्त सन 1795 को (आयु 70 वर्ष) उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। अहिल्याबाई के निधन के बाद तुकोजी इन्दौर की गद्दी पर बैठा।

तुकोजी का इन्दौर की गद्दी पर बैठना

अपने पति खांडे राव की मृत्यु के बाद, अहिल्याबाई ने जीवन की सभी इच्छाओं को त्याग दिया था और अपने पति के साथ उनकी चिता पर जाने के लिए सती होने का फैसला किया था। अंततः उसके ससुर मल्हार राव ने उसे रोकने के लिए मनाते हुए कहा कि "बेटी, मेरे बेटे ने मुझे छोड़ दिया, जिसे मैंने इस उम्मीद से पाला कि वह बुढ़ापे में मेरा सहारा बनेगा। अब, क्या तुम भी मुझ एक बूढ़े आदमी को अथाह सागर में डूबने के लिए अकेला छोड़ दोगी? फिर भी यदि तुम अपना मन नहीं बदलना चाहती तो पहले मुझे मरने दो।

मल्हार राव होलकर की मृत्यु उनके बेटे खांडे राव की मृत्यु के 12 साल बाद 1766 में हुई। मल्हार राव के पोते और खांडे राव के इकलौते बेटे माले राव होलकर 1766 में अहिल्याबाई के शासनकाल में इंदौर के शासक बने, लेकिन अप्रैल 1767 में कुछ ही महीनों के भीतर उनकी भी मृत्यु हो गई। खांडे राव के साथ उनके बेटे की मृत्यु के

बाद अहिल्याबाई इंदौर की शासक बनीं।

1765 में मल्हार राव द्वारा उन्हें लिखा गया एक पत्र दर्शाता है कि राव ने उन्हें एक विशाल तोपखाने के साथ ग्वालियर के सैन्य अभियान पर भेजते समय उनकी क्षमता पर कितना भरोसा किया था।

पहले से ही शासक बनने के लिए प्रशिक्षित, अहिल्याबाई ने मल्हार राव और उनके बेटे की मृत्यु के बाद पेशवा माधव राव प्रथम से होल्कर राजवंश का प्रशासन देने के लिए याचिका दायर की। मालवा में कुछ लोगों ने उनके शासन संभालने पर आपत्ति जताई, लेकिन मराठा सेना के होलकर गुट ने उनका साथ दिया। पेशवा ने 11 दिसंबर 1767 को सूबेदार तुकोजी राव होल्कर (मल्हार राव के दत्तक पुत्र) को अपना सैन्य प्रमुख नियुक्त करते हुए उन्हें अनुमति दे दी। वह सबसे प्रबुद्ध तरीके से मालवा पर शासन करने के लिए आगे बढ़ीं, यहाँ तक कि एक ब्राह्मण को भी बहाल कर दिया जिसने पहले उसका विरोध किया था। अहिल्याबाई अपनी प्रजा के पास नियमित रूप से जाती थीं, जिससे उनकी सहायता की आवश्यकता वाले किसी भी व्यक्ति के लिए वे हमेशा उपलब्ध रहती थीं।

माले राव होल्कर की मृत्यु के बाद, मल्हार राव होल्कर के दीवान गंगाधर राव ने, अहिल्याबाई को एक कमजोर शक्तिहीन विधवा मानते हुए, अहिल्याबाई से उन्हें अपने बेटे के रूप में अपनाने और सभी प्रशासनिक शक्तियाँ देने का अनुरोध करके अपने लिए शाही अधिकार हड़पने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से तुरंत इनकार कर दिया। तब गंगाधर राव ने उनके खिलाफ विद्रोह किया और पेशवा माधवराव के चाचा रघुनाथराव को इंदौर के होल्कर डोमेन पर हमला करने के लिए उकसाया। अपने जासूसों के माध्यम से शिप्रा नदी के तट पर रघुनाथराव की सेना के पड़ाव के बारे में पता चलने पर, अहिल्याबाई ने तुरंत अपने दिवंगत ससुर, महादजी सिंधिया और दामाजी राव गायकवाड़ के हम वतन लोगों को पत्र भेजकर सहायता मांगी और होल्कर को इकट्ठा किया।

तुकोजी की सहायता से नागपुर के भोंसले ने उनकी सहायता के लिए अपनी सेनाएँ भेजीं और पेशवा माधवराव ने अहिल्याबाई को रघुनाथराव के विरुद्ध आक्रामक कार्रवाई करने के लिए अधिकृत किया। अहिल्याबाई स्वयं अपनी महिला अंगरक्षकों के साथ रघुनाथराव का सामना करने के लिए युद्ध के मैदान में उतर गईं। अहिल्याबाई के साहस को देखकर, रघुनाथराव डर गए और यह कहते हुए पीछे हट गए कि वह सिर्फ माले राव की मृत्यु के लिए अहिल्याबाई को शोक व्यक्त करने आए थे।

अहिल्याबाई की उपलब्धियों में इंदौर को एक छोटे से गाँव से एक समृद्ध और सुंदर शहर में बदलना था। हालाँकि उनकी अपनी राजधानी निकटवर्ती महेश्वर में थी, जो नर्मदा नदी के तट पर एक शहर था। महेश्वर में अहिल्याबाई की राजधानी साहित्यिक, संगीत, कलात्मक और औद्योगिक उद्यम का स्थल थी। उन्होंने प्रसिद्ध मराठी कवि मोरोपंत और महाराष्ट्र के शाहिर अनंतफंडी को संरक्षण दिया, और संस्कृत विद्वान खुशाली राम को भी संरक्षण दिया। शिल्पकारों, मूर्तिकारों और कलाकारों को उनकी राजधानी में वेतन और सम्मान मिलता था और उन्होंने महेश्वर में एक कपड़ा उद्योग भी स्थापित किया था। अहिल्याबाई ने उस पारंपरिक कानून को निरस्त कर दिया जो पहले राज्य को नि:संतान विधवाओं की संपत्ति जब्त करने का अधिकार देता था।

1780 में अपने पति की मृत्यु के बाद 16 वर्षीय बेटे की मृत्यु के बाद, अहिल्याबाई की बेटी मुक्ताबाई सती हो गईं। 1742 में, मराठा शासक मल्हार राव होल्कर ने मस्जिद को ध्वस्त करने और उस स्थान पर विश्वेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण करने की योजना बनाई। हालांकि उनकी योजना आंशिक रूप से अवध के नवाब के हस्तक्षेप के कारण सफल नहीं हो सकी। 1750 के आसपास, जयपुर के महाराजा ने काशी विश्वनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए भूमि खरीदने के उद्देश्य से, स्थल के आसपास की भूमि का सर्वेक्षण करवाया। हालांकि मंदिर के पुनर्निर्माण की उनकी योजना भी सफल नहीं हो सकी। 1780 में, मल्हार राव की बहू अहिल्याबाई ने मस्जिद से सटे वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। अहिल्याबाई ने 1780 में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में काशी विश्वनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए धन दिया था, जिसे पहले नष्ट कर दिया गया था और बाद में 1669 में औरंगजेब ने इसे एक मस्जिद में बदल दिया था। श्री तारकेश्वर, श्री गंगाजी सहित 9 मंदिरों का निर्माण। अहिल्या द्वारकेश्वर, गौतमेश्वर (पुन:) मणिकर्णिका घाट, दशाश्वमेध घाट, जनाना घाट, अहिल्या घाट, शीतला घाटों का निर्माण य उत्तरकाशी धर्मशाला, रामेश्वर पंचकोशी धर्मशाला, कपिला धारा धर्मशाला और उद्यानों का निर्माण। ❐

पाथेय (आध्यात्मिक)

■ सरोजिनी चौधरी

ईश्वर ने जब पृथ्वी पर सब प्रकार के जलचर, नभचर एवं थलचर जीवों का निर्माण किया तब सोचा कि किसी ऐसे जीव की सृष्टि करनी चाहिए जो इन समस्त जीवों पर नियंत्रण रख सके। अत: उन्होंने अपनी असीम शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का समावेश कर अपने जैसे जीव का निर्माण किया और उसे पृथ्वी पर राज्य करने के लिए भेज दिया।

अब ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट प्राणी होने के कारण मनुष्य का संकल्प भव्य है। मनुष्य को परमेश्वर ने यह शक्ति दी है जिसके द्वारा वह नीर-क्षीर विवेक कर सकता है। उसके मानस जगत में एक ऐसे दिव्य ज्ञान का अस्तित्व है और वह है अन्तरात्मा।

दूसरों के साथ बुराई करने को हम पाप कहते हैं परन्तु यही नियम स्वयं के साथ भी लागू होता है। जब हम अपने साथ बुरा बर्ताव करते हैं तब भी पाप करते हैं। अत: स्वयं से यह प्रतिज्ञा करें कि सदा अपनी भलाई की बात करेंगे। अपना सम्मान स्वयं करेंगे और भविष्य के लिए उत्कृष्ट चित्र स्थापित करेंगे।

जब व्यक्ति दृढ़तापूर्वक स्वयं से कहता है कि मैं एक साधारण व्यक्ति नहीं हूँ, शुद्ध आत्मस्वरूप शक्ति का पुंज हूँ, महान तेजस्वी, पूर्ण प्रतिभावान हूँ, शरीर नहीं, जीव नहीं

परम आत्मा का स्वरूप हूँ। मैं अपनी शारीरिक , मानसिक शक्तियों का स्वामी हूँ तब ऐसे आत्म संकेतों से सुप्त शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं।

मन में यह विचार आना चाहिए कि मैं ईश्वर का अंश हूँ। मुझसे श्रेष्ठ जीव संसार में दूसरा कोई नहीं है। आत्म-ज्ञान के दिव्य स्वरूप को प्रकाशित करने से मस्तिष्क मानसिक दासता से मुक्त हो जाता है। मन का प्राण आत्मा है और इसमें प्रवेश करने से संशय, भ्रम और भय -भ्रांति के जाल से हमारा मन मुक्त हो जाता है। यदि जीवन को वास्तव में उपयोगी बनाना है तो कमज़ोर भावनाओं को त्याग कर्तव्य की ओर ध्यान दें और इन्हें पूर्ण करने में संलग्न हो जायें। अब प्रश्न उठता है कि कर्तव्य कौन से हैं जिन्हें पूरा करना है-

पहला कर्तव्य शरीर की सही देखभाल करना है। इस अनमोल मशीन के उपयोग में कितनी सावधानी की आवश्यकता है, यह हम सब अच्छी तरह जानते हैं। शरीर के उपरांत अपनी मानसिक शांति को स्थिर रखने का सतत प्रयत्न करना चाहिए।

प्रश्न उठता है कि हम आगे कैसे बढ़ें? हमारी उन्नति का उद्गम स्थान हमारी आत्मा है। यदि अपनी आत्मा में भटकते हुए मन को इष्ट भावना पर आरूढ़ कर लिया तो कार्य अत्यन्त सुगम हो जाएगा। हमारा एक-एक विचार हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करता है। जैसा हम सोचते-विचारते और बोलते हैं, जैसी भावनाओं में निरंतर रमण करते हैं, उसी के अनुसार हमारा पथ प्रशस्त होता है। अत: आन्तरिक ईश्वरीय शक्तियों के विकास की आवश्यकता है।

इसके लिए कुछ उपाय निम्नलिखित हैं-

1. सद् ग्रन्थों का अध्ययन
2. महापुरुषों की जीवनी, उनके भाषण और प्रवचन
3. संसार का भ्रमण और क्रियात्मक अनुभव
4. समाज में रह कर ज्ञान प्राप्त करना
5. बातचीत, लेखन तथा कहानी एवं लेख के द्वारा

मार्ग थोड़ा कठिन अवश्य है पर प्रयत्न करते रहने से सब संभव हो जाता है। हमारी दुर्बलताएँ हमें इस पथ पर चलने नहीं देतीं , मन बार-बार विद्रोह करता है, कारण हैं हमारी पंचेन्द्रियाँ।

पंच इन्द्रियों को देह रूपी रथ को खींचने वाला अश्व माना गया है। आत्मा उस रथ में सवार है। रथी को ध्येय पर ले जाने के स्थान पर ये अश्व विषयों की खाई में ला गिराते हैं। अत: इनको वश में करके नियत मार्ग पर चलाने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है।

भगवान कृष्ण ने गीता में इन्द्रियों को नियंत्रित करने के विषय में अर्जुन को समझाते हुए कहा है कि यद्यपि मन वायु की भाँति चंचल है और उसको नियंत्रित करना कठिन है फिर भी निरंतर अभ्यास और दृढ़ निश्चय के द्वारा इसे वश में किया जा सकता है।

अत: निरंतर अभ्यास करें, अपने अंदर जो ईश्वरीय शक्तियाँ हैं उन्हें बाहर आने दें, यही दैवी संपदा है जिसके बल पर आप कल्याणकारी मार्ग के अनुयायी हो सकते हैं। ❐

जन-जन के नायक शिवाजी महाराज

■ मानवेन्द्र (संगठन मंत्री, यमुना विहार)

ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ था और हिंदू साम्राज्य स्थापित हुआ। भगवा के अनन्य उपासक शिवाजी रणनीति, कूटनीति में माहिर होने के साथ भ्रष्टाचार निषेधक और हिंदुओं की घर वापसी के समर्थक थे। स्वामी विवेकानंद ने कहा था- 'क्या शिवाजी से बड़ा कोई नायक, संत, भक्त और राजा है?' हमारे महान ग्रंथों में मनुष्यों के जन्मजात शासक के जो गुण हैं, शिवाजी उन्हीं के अवतार थे। वह भारत के असली पुत्र की तरह थे जो देश की वास्तविक चेतना का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्होंने दिखाया था कि भारत का भविष्य अभी या बाद में क्या होने वाला है। एक छतरी के नीचे स्वतंत्र इकाइयों का एक समूह, जो एक सर्वोच्च अधिराज्य के अधीन हो।

एक सच्चा राजा जानता है कि कैसे हारे हुए युद्ध को भी जीतना है। एक सच्चा राजा जानता है कि जब उसका जीवन समाप्त हो जाता है, तो भी उसे कैसे जीना चाहिए। शिवाजी महाराज जन-जन के नायक हैं। लेकिन स्वयं शिवाजी का नायक कौन है? शिवाजी महाराज ने न कभी विदुर को देखा-पढ़ा था, न चाणक्य को। न उनके दौर में कोई ऐसा शूरवीर था, जो उन्हें प्रेरित कर सकता होता। लेकिन शिवाजी महाराज ने विदुर, कृष्ण, चाणक्य, शुक्राचार्य, हनुमान और राम-सभी को आत्मसात किया हुआ था।

उनकी पहली नायक उनकी माता जीजाबाई हैं, जिन्होंने बचपन से ही उनको रामायण और महाभारत की शिक्षा दी। महात्मा विदुर ने कहा था-

कृते प्रतिकृतिं कुर्याद्विंसिते प्रतिहिंसितम्।
तत्र दोषं न पश्यामि शठे शाठ्यं समाचरेत्॥
(महाभारत विदुरनीति)

अर्थात् जो (आपके प्रति) जैसा व्यवहार करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करो। जो तुम पर हिंसा करता है, उसके प्रतिकार में तुम भी उस पर हिंसा करो! मैं इसमें कोई दोष नहीं मानता, क्योंकि शठ के साथ शठता करना ही उचित है। और जब शिवाजी ने अफजल खां का वध किया, तो

जाहिर तौर पर उनकी यही शिक्षा उनकी प्रेरणा थी। जबकि उनके अधिकांश मंत्रियों की समझ से यह सारी बातें परे थीं। शिवाजी महाराज ने घुड़सवारी, तलवारबाजी और निशानेबाजी दादोजी कोंडदेव से सीखी थी।

शिवाजी ने हमेशा उन लोगों की मदद की जो हिंदू धर्म में लौटना चाहते थे। यहां तक कि उन्होंने अपनी बेटी की शादी एक ऐसे हिंदू से कर दी, जो अतीत में मुसलमान बना दिया गया था। उन्होंने प्राचीन हिन्दू राजनीतिक प्रथाओं तथा दरबारी शिष्टाचारों को पुनर्जीवित किया और फारसी के स्थान पर मराठी एवं संस्कृत को राजकाज की भाषा बनाया। शिवाजी के राज्याभिषेक समारोह में हिन्दू स्वराज की स्थापना का उद्घोष किया गया था।

भ्रष्टाचार और शिवाजी

शिवाजी ने राजदरबारों और शासन प्रणाली में निहित भ्रष्टाचार को देख-समझ लिया था। साधारण बुद्धि का राजा होता, तो अपने दरबार में या अपने शासन में निहित भ्रष्टाचार को समाप्त करवा कर ही स्वयं को महान समझ लेता। लेकिन शिवाजी महाराज एक कदम और आगे गए। उन्होंने अपने राज्यक्षेत्र में तो भ्रष्टाचार को समाप्त किया ही, इसी हथियार का प्रयोग अपने राज्य के विस्तार में किया। अनिल माधव दवे ने अपनी पुस्तक 'शिवाजी एंड सुराज' में लिखा है, ''महाराज को राज व्यवहार में भ्रष्टाचार, चाहे वह आचरण में हो या अर्थतंत्र में, बिल्कुल अस्वीकार्य था।''

अपने अधिकारियों को लिखे 13 मई, 1671 के एक पत्र में शिवाजी लिखते हैं, ''अगर आप जनता को तकलीफ देंगे और कार्य संपादन हेतु रिश्वत मांगेंगे तो लोगों को लगेगा कि इससे तो मुगलों का शासन ही अच्छा था और लोग परेशानी का अनुभव करेंगे।''

मनोवैज्ञानिक युद्ध कौशल

औरंगजेब ने शिवाजी की चुनौती का सामना करने के लिए बीजापुर की बड़ी बेगम के आग्रह पर अपने मामा शाइस्ता खान को दक्षिण भारत का सूबेदार बना दिया। शाइस्ता खान ने डेढ़ लाख सेना लेकर पुणे में 3 साल तक लूटपाट की। शिवाजी ने 350 मावलों के साथ उस पर छापामार हमला कर दिया। शाइस्ता खान अपनी जान बचाकर भागा। शाइस्ता खान को इस हमले में अपनी 3 उंगलियां गंवानी पड़ी। औरंगजेब ने शाइस्ता खान को दक्षिण भारत से हटाकर बंगाल भेज दिया। लेकिन शाइस्ता खान अपने 15,000 सैनिकों के साथ फिर आया और शिवाजी के कई क्षेत्रों में आगजनी करने लगा। जवाब में शिवाजी ने मुगलों के क्षेत्रों में लूटपाट शुरू कर दी। शिवाजी ने 4 हजार सैनिकों के साथ सूरत के

व्यापारियों को लूटने का आदेश दिया। उस समय मुसलमानों के लिए हज पर जाने का द्वार सूरत ही था।

सामाजिक चुनौतियों का सामना

शिवाजी ने अपने धर्म की रक्षा और संवर्धन के लिए ब्राह्मणों, गायों और मंदिरों की रक्षा को अपनी राज्यनीति का लक्ष्य घोषित किया था। लेकिन उस समय प्रचलित छुआछूत एक बड़ी बाधा थी। सन् 1674 तक पश्चिमी महाराष्ट्र में स्वतंत्र हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के बावजूद शिवाजी का राज्याभिषेक नहीं हो सका था। ब्राह्मणों ने उनका घोर विरोध किया था, क्योंकि उनके अनुसार शिवाजी क्षत्रिय नहीं थे। राज्याभिषेक के लिए उन्हें क्षत्रियता का प्रमाण चाहिए था। बालाजी राव जी ने शिवाजी के मेवाड़ के सिसोदिया वंश से संबंध के प्रमाण भेजे, जिसके बाद रायगढ़ में उन्होंने शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक किया।

युद्ध नीति

शिवाजी महाराज ने अपना साम्राज्य बाहुबल के साथ-साथ बुद्धिबल से स्थापित किया था। उन्होंने स्थापित साम्राज्यों और सल्तनतों की युद्ध-मशीनरी में एक प्रमुख दोष खोज निकाला। और अपनी मराठा सेना में चेन-आफ-कमांड को सर्वोच्च शक्तियां दीं। चाणक्य की नीति पर चलते हुए उन्होंने अपने अद्वितीय गुप्तचरों और कार्यकर्ताओं का तानाबाना पूरे देश में फैला दिया था। उस दौर में राजा के मर जाने पर सैनिक भी युद्ध से भाग खड़े होते थे, लेकिन शिवाजी के सशक्त योद्धा उनकी मृत्यु के 27 साल बाद भी उनके सपने को जीवित रखने के लिए लड़ते रहे थे। क्योंकि शिवाजी अपनी जागीर बचाने के लिए नहीं लड़े। वे स्वराज्य की स्थापना

के लिए लड़े। उनका लक्ष्य एक स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित करना था लेकिन उनके सैनिकों को स्पष्ट आदेश था कि भारत के लिए लड़ो, किसी राजा विशेष के लिए नहीं।

सर्जिकल स्ट्राइक

शिवाजी की अभिनव सैन्य रणनीति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने गुरिल्ला युद्ध के तरीकों का आविष्कार किया, जिन्हें शिवा सूत्र या गामिनी कावा कहते हैं। यह भूगोल, फुर्ती और भौंचक कर देने वाले सामरिक कारकों के अनुसार भारी जोखिम लेकर युद्ध में परिस्थिति का लाभ उठाने की रणनीति है। इसमें बड़े और अधिक शक्तिशाली दुश्मनों को हराने के लिए सटीक हमलों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसमें सर्जिकल स्ट्राइक जितना ही भारी जोखिम है।

मानसिक दृढ़ता

शिवाजी महिलाओं से बलात्कार या छेड़छाड़ पर कठोर दंड देते थे। क्रूर घटनाओं के लिए वे महाक्रूर थे। दंड अपराध की गंभीरता पर निर्भर करता था। जब शिवाजी मात्र चौदह वर्ष के थे, तो उनकी जागीर के एक गांव के रणजी नाम के एक पाटील (गांव के मुखिया) पर एक विधवा की इज्जत लूटने का आरोप साबित हुआ था। अपनी माता और दादाजी की उपस्थिति में शिवाजी ने अपना फैसला सुनाया, 'पाटील रणजी, ताराफ-खेड़ेदेरे, बाबाजी भिकाजी गुजर ने पाटील के रूप में अपने कार्यालय में नौकरी करते हुए अपराध का कार्य किया है। उसके कार्यों की सूचना हमारे पास पहुंची है- और उसका अपराध संदेह से परे साबित हो गया है। इसके बाद हमारे आदेश के अनुसार, उसके सभी चार अंग (हाथ-पैर) भंग कर दिए जाएं।'

उस युग में इससे पहले कभी भी किसी भी (गरीब) पुरुष या महिला ने इतना सुरक्षित और इतना प्रसन्न महसूस नहीं किया था। उस दिन से पूरा मावल शिवाजी से प्रेम करने लगा। शिवाजी के राज्याभिषेक समारोह में हिन्दू स्वराज की स्थापना का उद्घोष किया गया था। विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद दक्षिण में यह पहला हिन्दू साम्राज्य था। उन्होंने दरबार के कई पुरानी विधियों को पुनर्जीवित किया एवं शासकीय कार्यों में मराठी तथा संस्कृत भाषा के प्रयोग को बढ़ावा दिया। महाराष्ट्र में गणेश चतुर्थी के सार्वजनिक त्योहार की शुरुआत सबसे पहले छत्रपति शिवाजी महाराज ने ही की थी।

भारतीय नौसेना के जनक

17 वीं शताब्दी में छत्रपति शिवाजी के राज्यकाल में एक मजबूत मराठा नौसेना ने भारतीय जल सीमाओं की अनेक विदेशी आक्रमणकारियों से सफलतापूर्वक रक्षा की। छत्रपति शिवाजी की नौसेना भलीभांति प्रशिक्षित थी और उनके पोत तोपों से सुसज्जित थे। शिवाजी ने अंडमान द्वीप समूह पर निगरानी चौकियों का निर्माण कराया जहां से शत्रुओं पर निगाह रखी जाती थी। मराठा नौसेना ने कई बार अंग्रेजी, डच और पुर्तगाली नौसेना पर सफलतापूर्वक हमले किये और जहाजों पर कब्जा किया। शिवाजी ने अपनी दूरदर्शिता और रणनीति से भारतीय नौसेना के इतिहास में ऐसी छाप छोड़ी कि उन्हें आधुनिक भारतीय नौसेना का जनक कहा जाता है।

धार्मिक सहिष्णुता

1650 के पश्चात् बीजापुर, गोलकुंडा, मुगलों की रियासत से भागे अनेक मुस्लिम, पठान व फारसी सैनिकों को विभिन्न ओहदों पर शिवाजी द्वारा रखा गया था जिनकी धर्म सम्बन्धी आस्थाओं में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाता था।

भगवा ध्वज और गुरु के प्रति असीम श्रद्धा

एक कथा के अनुसार छत्रपति शिवाजी के गुरुदेव समर्थ गुरु रामदास एक दिन गुरु भिक्षा लेने जा रहे थे। उन पर शिवाजी की नजर पड़ते ही प्रणाम कर निवेदन किया, 'हे गुरुदेव! मैं अपना पूरा राज-पाट आपके कटोरे में डाल रहा हूं! अब से मेरा राज्य आपका हुआ!' तब गुरु रामदास ने कहा, 'सच्चे मन से दे रहे हो! वापस लेने की इच्छा तो नहीं?' 'बिल्कुल नहीं! यह सारा राज्य आपका हुआ!' 'तो ठीक है! यह लो!' कहते कहते गुरु ने अपना भगवा चोला फाड़ दिया! उसमें से एक टुकड़ा निकाला और शिवाजी के मुकुट पर बांध दिया और कहा, 'लो! मैं अपना राज्य तुम्हें सौंपता हूं, इसे चलाने और देखभाल के लिए। मेरे नाम पर राज्य करो! मेरी धरोहर समझ कर! मेरी तुम्हारे पास अमानत रहेगी।' 'गुरुदेव! आप तो मेरी भेंट लौटा रहे हैं.' कहते-कहते शिवाजी की आंखें गीली हो गयीं। 'ऐसा नहीं! कहा न मेरी अमानत है. मेरे नाम पर राज्य करो. इसे धर्म राज्य बनाये रखना, यही मेरी इच्छा है।' 'ठीक है गुरुदेव! इस राज्य का झंडा सदा भगवा रंग का रहेगा! इसे देखकर आपकी तथा आपके आदर्शों की याद आती रहेगी।' 'सदा सुखी रहो! कहकर गुरु रामदास भिक्षा हेतु चले दिए! तब से मराठा साम्राज्य का ध्वज भगवा रंग का रहा। ❐

ग्रीष्मावकाश शिविरों के समाचार

पूर्वी विभाग

पूर्वी विभाग, गांधी नगर जिले में स्थित हेडगेवार भवन, कैलाश नगर में पिछले एक माह से चल रहे ग्रीष्मावकाश शिविर के समापन समारोह में विभाग से सहमंत्री रुचि जी स्वावलंबन प्रमुख पवन जी, जिले से कोषाध्यक्ष परमेश्वर जी, मंत्री पंकज जी, सहमंत्री हरेन्द्र जी, समिति अध्यक्ष सविता जी, मंत्री निर्मल जी, दलजीत जी एवं शिक्षिका/निरीक्षिका ने भाग लिया। बच्चों ने कई तरह के रंगमंचीय अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए। किशोरी विकास की कक्षा शिव सेवा केन्द्र, शशि गार्डन में रही। शिक्षा से सम्बन्धित खेल व गीत कराये गये। बालिका संस्कार और सौन्दर्य प्रसाधन की कक्षा में पर्यावरण पर चर्चा की गई।

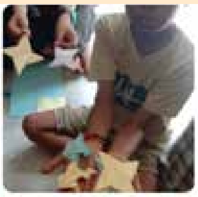

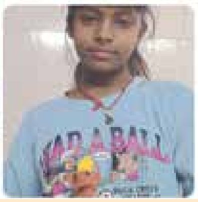

उत्तम जिला

इस वर्ष का ग्रीष्मावकाश उत्तम जिले के लिए बहुत ही खुशनुमा रहा। इस सत्र में आर्ट एण्ड क्राफ्ट की कक्षाएं सभी केन्द्रों पर लगाई गई। बच्चों में बहुत ही उत्साह देखने को मिला। केन्द्रों की साफ-सफाई और उन्हें सजाने का काम भी बच्चों ने पूरे मनोयोग से सम्पन्न किया। संस्कार और कार्यकुशलता की शिक्षा देने का कार्य निरीक्षिका श्रीमती रंजना जी ने उत्तम प्रकार से किया। कम्पयूटर और इंगलिश स्पीकिंग का कोर्स भी नियमित रूप से चल रहा है।

कैलाश नगर

गत 7 जून 2024 को हेडगेवार भवन, कैलाश नगर में तीन दिवसीय ग्रीष्मावकाश शिविर का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों को भिन्न-भिन्न तरह की गतिविधियां कराई गई जैसे कि योग, चित्रकला, डांस क्लास और इंगलिस स्पीकिंग कोर्स आदि। बच्चे बड़े ही उत्साहपूर्वक एवं प्रसन्न दिखे। ❐

संत कबीर जयंती पर शोभायात्रा

गत दिनों सेवा भारती के कार्यकर्ताओं और कुछ अन्य संगठनों के लोगों ने संत कबीर की जयंती पर भव्य शोभायात्रा निकाली। इसमें बड़ी संख्या में आम लोगों की सहभागिता रही। चित्र में भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चे के अध्यक्ष श्री मोहनलाल गहरा, महामंत्री श्री चंद्रप्रकाश आदि दिख रहे हैं।

किशोरी विकास प्रकल्प

समर्थ किशोरी, समग्र विकास

■ अंजू पांडेय

मनुष्य के जीवन का सबसे संवेदनशील पड़ाव उसकी किशोरावस्था ही होती है खासकर लड़कियों की, क्योंकि वो ना तो अपनी बात किसी से कह पाती हैं और ना ही उस अवस्था में इतनी समझ होती है कि स्वयं को संभाला जा सके, क्योंकि किशोरावस्था में बच्चियों के अंदर बहुत से परिवर्तन होते हैं जिसके कारण उनके मन में भटकाव की स्थिति उत्पन्न होती है।

उस स्थिति को ध्यान में रखते हुए सेवा भारती द्वारा किशोरियों के शारीरिक, मानसिक सामाजिक और बौद्धिक विकास हेतु इस प्रकल्प को चलाया जा रहा है। जिसे किशोरी विकास के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकल्प के माध्यम से किशोरियों को स्वस्थ, शिक्षित, संतुलित, स्वावलंबी, आत्मविश्वासी, विवेकशील, जागरूक, आत्मनिर्भर, सुयोग्य नागरिक बनाना और अपनी सुरक्षा करने में सक्षम हो व स्वयं के महत्व को समझने वाली बन सकें, ये सभी विषय इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं।

शारीरिक विकास

इस प्रकल्प के माध्यम से किशोरियों को तरह तरह के खेल खिलाना, अपनी दिनचर्या में योग प्राणायाम को शामिल करना, अपनी स्वच्छता का ध्यान रखना, अपने खान पान का ध्यान रखना, अपने अंदर हो रहे शारीरिक बदलाव को समझना अपनी संस्कृति व संस्कारों को किसी कहानी के साथ बताना, सामान्य बीमारियों के घरेलू इलाज से स्वयं को स्वस्थ रखने तथा प्राथमिक सहायक चिकित्सा तथा आत्म सुरक्षा करने के बारे में भी बताया जाता है।

मानसिक विकास

इसी प्रकार से मानसिक विकास हेतु किशोरियों को किसी भी प्रकार का मानसिक अवसाद ना हो इसके लिए तनाव प्रबंधन, सकारात्मक सोंच, स्व मूल्यांकन, जीवन मूल्यों का समावेश, विवेकशील चिंतन, भावनात्मक संतुलन तथा समय प्रबंधन जैसे विषयों के बारे में जानकारी दी जाती है।

सामाजिक विकास

किशोरिया समाज में रहकर अपने व्यक्तित्व को कैसे निखार सकती हैं इस हेतु किसी प्रभावी व्यक्तित्व के बारे में चर्चा करना, संवाद कौशल कैसा हो? उनके अंदर नेतृत्व करने की क्षमता कैसे विकसित हो, परिवार का महत्व क्या होता है? हमारे सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का क्या महत्व है, समाज के साथ संबंध कैसे होने चाहिए तथा हमारा पर्यावरण संरक्षण कैसे अच्छा हो सकता है इन सभी विषयों पर किशोरियों के साथ स्वस्थ चर्चा की जाती है जिससे उनका सामाजिक विकास भी हो सके।

बौद्धिक विकास

एक किशोरी भविष्य की कुशल महिला बन सके इसके लिए उसका बौद्धिक स्तर अच्छा होना भी आवश्यक है, इसके लिए किशोरियों के बौद्धिक विकास हेतु उन्हें समाज में किसी भी विषय पर चर्चा करना, समस्याओं का समाधान कैसे हो सकता है तथा अपनी भूमिका राष्ट्र के प्रति कैसे और बढ़ सके, सामाजिक कार्यों में उनकी क्या भूमिका होनी चाहिए और अपनी जिम्मेदारी को कैसे निभाना है?

राष्ट्र हित का ध्यान रखते हुए अपने कार्यों को करना उनकी नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए ऐसी चर्चा किशोरियों के साथ की जाती है।

उनकी प्रतिभा का विकास करवाना जिससे कि वे समाज में अपने आप को स्थापित कर सकें, अपने और अपने परिवार के साथ बच्चियों के संबंध मधुर रहे, अपनी बात को किस तरह से कहना है यह सब उन बच्चियों को इस प्रकल्प के माध्यम से सिखाया जाता है।

इसके अलावा समय-समय पर कोई प्रतियोगिता करवाना उन्हें स्वावलंबी बनाने हेतु कुछ कौशल विकास का प्रशिक्षण देना आदि। यह सभी विषय भी इस प्रकल्प में रहते हैं। सेवा भारती द्वारा चलाया जा रहा यह प्रकल्प बस्ती आधारित है। प्रत्येक केन्द्र 2 घंटे के लिए साप्ताहिक चलता है, केंद्र पर एक शिक्षिका बस्ती की ही कोई बहन वहां जाकर 2 घंटे के लिए बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार के साथ कक्षा चलाती हैं, तथा सेवा भारती की कार्यकर्ता बहने भी समय-समय पर केदो पर जाकर अपना मार्गदर्शन देती हैं।

वर्तमान में सेवा भारती दिल्ली में सात केंद्र चल रहे हैं, प्रत्येक केंद्र पर 15 से 20 बच्चियां क्लास लेती हैं। ❐

30829 नियमित सेवा कार्य

राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा आयोजित सेवा भारती प्रांतीय प्रतिनिधि संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री, संगठन मंत्री एवं प्रशिक्षण प्रमुख के साथ दो दिवसीय बैठक का आयोजन राजस्थान के चूरू जिले में ऐतिहासिक स्थान ताल छापर कस्बे में दिनांक 28 जून से 29 जून 2024 तक आयोजित हुआ। इस बैठक में संपूर्ण भारत में सेवा भारती द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की गुणवत्ता एवं सभी सेवा बस्तियों तक पहुंच के निमित विषय प्रमुखों ने पीपीटी के माध्यम से योजना एवं वृत प्रस्तुत किया। विषय प्रमुखों ने पिछले वर्ष का वृत एवं गुणवत्ता पूर्ण कार्य योजना जिनमें छात्रावास, प्रशिक्षण, अध्ययन, सीएसआर, स्वावलंबन, वैभवश्री, सेवा दिशा वृत विश्लेषण, प्रचार, आपदा प्रबंधन, कार्यालय, सुपोषित भारत, किशोरी विकास, सेवा में महिला कार्य एवं कार्यकर्ता विकास योजना पर चर्चा एवं योजना प्रस्तुत की गई।

संपूर्ण भारत से चुने 12 सेवा कार्यों का विशेष वृत प्रांत के पदाधिकारियों ने प्रस्तुत किया। इन परिणामकारी प्रकल्पों से प्रेरणा लेकर अन्य प्रांतों ने योजना की चर्चा की।

कुछ सत्रों में श्रेणी अनुसार सेवा कार्यों की चर्चा की गई। सेवा के परम धर्म पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय सेवा भारती के संगठन मंत्री श्री सुधीर कुमार ने बताया कि सेवा हमारे समाज के मूल में है। परिवार में मां बचपन से ही बालकों को समाज की सेवा का प्रशिक्षण देकर जिम्मेदारी का ज्ञान कराती है। साथ उन्होंने सेवा के विमर्श एवं टोली विकास के विषय पर चर्चा कर सेवित को सेवक बनाने की इस यात्रा पर निकले अनेकों कार्यकर्ताओं के प्रयासों को सत्र में रखा।

दो दिवसीय अखिल भारतीय बैठक के समापन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवा प्रमुख श्री पराग जी अभयंकर ने संघ के स्थापना के शताब्दी वर्ष पूर्ण करने पर सभी सेवा बस्तियों एवं 5000 से अधिक जनसंख्या के गांव में वंचित, उपेक्षित, अभावग्रस्त एवं पीड़ित जन की सेवा के लिए शिक्षा, स्वावलंबन, स्वास्थ्य एवं सामाजिक आयामों सहित पहुंचने के लिए योजना तैयार कर सेवा कार्य विस्तार एवं दृढ़ीकरण करने के लिए कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया। नर सेवा नारायण सेवा के मूल मंत्र के साथ कहा की बस्ती में अगर कोई वंचित है, उपेक्षित है, अभावग्रस्त है या पीड़ित है तो स्वयंसेवक सदैव सेवा के लिए अग्रिम पंक्ति में उपस्थित रहता है।

ध्यातव्य है राष्ट्रीय सेवा भारती 1000 से अधिक सम्बद्ध संस्थाओं का संगठन है। संपूर्ण भारत वर्ष में 30829 नियमित सेवा कार्य संचालित किए जा रहे हैं। ❐

योग दिवस के कार्यक्रम

योग दिवस पर सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने अनेक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए। यहां उन कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत है-

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प केंद्र (दिल्ली प्रदेश) में 21 जून 2024 को "अंतराष्ट्रीय योग दिवस" जिसका इस वर्ष का थीम "स्वयं और समाज के लिए योग" है, के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी योग अभ्यास कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें केंद्र में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं, कार्यकर्ताओं एवं कार्यकारिणी के सदस्यों ने भाग लिया। जैसा कि आप सभी को विदित है कि बस्ती के बच्चों को प्रकल्प के द्वारा विभिन्न प्रकार के आयामों का प्रशिक्षण पिछले कई वर्षों से निरंतर प्रदान किया जा रहा है। उसी कड़ी में बस्ती के बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए इसी महीने जून 2024 से नियमित रूप से योग की कक्षाएं भी प्रारम्भ हो चुकी हैं। योग प्रशिक्षिका कुमारी वैशाली जी के द्वारा बस्ती के बच्चों को विभिन्न प्रकार के योगासन, आसनों एवं प्राणायाम के बारे में बताया एवं सिखाया जाता है।

इस वर्ष अंतराष्ट्रीय योग दिवस-2024 पर योगाभ्यास का कार्यक्रम प्रातः 11.00 बजे से प्रारम्भ हुआ। योग कक्षा में शिक्षण प्राप्त करने वाले बच्चों के द्वारा विभिन्न प्रकार के योगासन, आसन एवं प्राणायाम का प्रदर्शन किया गया। इसके बाद केंद्र में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं के द्वारा भी योगासन किया गया। और इस बार इस कार्यक्रम में लगभग 80 बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम के उपरांत उपस्थित कार्यकारिणी के सदस्यों ने बच्चों को योग का महत्व बताया और उन्हें नियमित रूप से योगसान और प्राणायाम करने को प्रेरित किया।

दक्षिणी विभाग

सेवा भारती,दक्षिणी दिल्ली विभाग की ओर से बहुत उत्साह व जागरूकता के साथ तीनों जिलों में योग दिवस मनाया गया। विभाग में कुल नगर 18 हैं, इनमें से 15 नगरों में 17 कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। कार्यक्रम सामान्यत: प्रात: छह से सात बजे हुए, किंतु दो कार्यक्रम,चुंगी नम्बर 3 व बिलासपुर कैम्प में प्रात: 9:00 से 10:00 बजे तक हुआ। एक कार्यक्रम सुधार बस्ती कालकाजी में सायं 5:00 हुआ। इनमें कम से कम संख्या 30 और अधिक से अधिक संख्या 700 रही। महिला,पुरुष,युवा व विद्यार्थियों सहित सभी आयुवर्गों के लोग थे। जहां सेवा बस्तियों (कैम्प) से संख्या अधिक थी वहीं सामान्य,प्रतिष्ठित व धनाढ्य वर्गो की भागीदारी भी

रही। कहीं के उच्चारण, कहीं गायत्री मंत्र तो कहीं कल्याण मंत्र द्वारा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

इन कार्यक्रमों में 10 मिनट के लिए 'योग व भारतीय संस्कृति के विश्व में विस्तार' पर और सेवा भारती के द्वारा 'सेवा बस्तियों में किए जाने वाले सेवाकार्यों' के बारे में विचार रखे गए। समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों का परिचय व सम्मान भी किया गया। डॉ अभिषेक खन्ना व आयुष मंत्रालय के राष्ट्रीय योग संस्थान से अमनदीप शास्त्री सहित 45 अतिथि विभिन्न कार्यक्रमों में उपस्थित हुए। कार्यक्रम के उपरांत पानी व प्रसाद इत्यादि की व्यवस्था व कुछ कार्यक्रमों में दिल्ली प्रान्त द्वारा उपलब्ध करवाई गई टी-शर्ट भी बांटी गई। सेवा भारती दक्षिणी विभाग के सभी हितैषी,पदाधिकारी व कार्यकर्ता बंधु-भगिनी अपने तय या निकट के कार्यक्रम में सक्रिय रहे।

यमुना विहार विभाग

भीष्म सेवा केन्द्र, प्रताप नगर, सबोली, मंडोली नगर जिला नंद नगरी में योग दिवस मनाया गया। केंद्र में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं, कार्यकर्ताओं एवं केंद्र की समिति के सदस्यों ने भाग लिया। जैसा कि आपसभी को विदित है कि बस्ती के बच्चों को प्रकल्प के द्वारा विभिन्न शिक्षा व स्वावलम्न का प्रशिक्षण पिछले कई वर्षो से निरंतर प्रदान किया जा रहा है। उसी कड़ी में बस्ती के बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए इसी महीने जून 2024 से नियमित रूप से साप्ताहिक योग की कक्षाएं भी प्रारम्भ हो चुकी हैं।

योग प्रशिक्षिका श्रीमती ललिता सिंह जी के द्वारा बस्ती के बच्चों को विभिन्न प्रकार के योगासन, आसनों एवं प्राणायाम के बारे में बताया एवं सिखाया जाता है।

योग कक्षा में शिक्षण प्राप्त करने वाले बच्चों के द्वारा विभिन्न प्रकार के योगासन, आसन एवं प्राणायाम का प्रदर्शन किया गया। इसके बाद केंद्र में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं व समाज के अन्य छात्र-छात्राओं बहन-भाइयों ने भी योगासन किए। कार्यक्रम में लगभग 144 की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के उपरांत विभाग मंत्री गवेन्द्र जी ने सेवा भारती के प्रकल्पों की जानकारी दी। मंच पर सेवा भारती से प्राप्त 25 टी शर्ट पहन कर बाल-बालिकाओं योगासन में भाग लिया। इस प्रकार अन्तराष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम श्रीमान महीपाल जी की निशुल्क धर्मशाला में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि समाजसेवी दानदाता श्रीमान सूरज जी अपने परिवार सहित रहे तथा उन्होंने सभी को अल्पाहार कराया।

उत्कर्ष सेवा केन्द्र

सेवा भारती द्वारा संचालित उत्कर्ष केन्द्र पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों को अलग-अलग प्रकार के योग कराए गए और उन योग विषयों का महत्व और योगा का जीवन में महत्व के बारे में बताया गया। विशेष महिला पुलिस भी साथ में अपने कार्यक्रम में पूरे समय रही। बाद में सामूहिक जलपान की व्यवस्था की गई।

पूर्वी विभाग

10वें अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में सेवा भारती और मोरार जी देसाई संस्थान एवं आयुष मंत्रालय के सहयोग से नगरशः योगाभ्यास कराया गया। प्रशिक्षित बन्धुओं और भगिनियों ने प्रातः ही कक्षाएं प्रारम्भ कर दीं। एक से दो घंटे तक यह अभ्यास चला। सभी ने उत्साहपूर्वक पूरे मनोयोग

अपनी आयु और क्षमतानुसार योग किया। जिले-4, नगर-19, कुल कार्यक्रम - 26, योग शिक्षक -12, मुख्य अतिथि -15 संभावित संख्या-1357, महिला- 408, पुरुष-612, युवा -217, बाल-120। अन्य जानकारी- टी-शर्ट, जलजीरा, बिस्किट, एवं जल वितरण

पश्चिमी विभाग

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सेवा भारती, उत्तम जिले के सभी केन्द्रों में प्रात: 9.30 से योग अभ्यास कार्यशालाएं लगाई गई। इनमें ऑर्ट आफ लिविंग से श्री मृदुल बत्रा जी व उनके सहयोगी कार्यकर्ताओं श्री वैभव खन्ना, सुश्री स्वाति अरोड़ा, श्री देवेश कुमार, सुश्री तारिणी भसीन जी का मार्गदर्शन रहा। सभी शिक्षिकाओं, महिला समिति एवं दायित्ववान कार्यकर्ताओं ने भी इस अवसर पर पहुंच कर योग अभ्यास का लाभ उठाया।

इस वर्ष का ग्रीष्मावकाश उत्तम जिले के लिए बहुत ही खुशनुमा रहा। इस सत्र में आर्ट एण्ड क्राफ्ट की कक्षाएं

सभी केन्द्रों पर लगाई गई। बच्चों में बहुत ही उत्साह देखने को मिला। केन्द्रों की साफ-सफाई और उन्हें सजाने का काम भी बच्चों ने पूरे मनोयोग से सम्पन्न किया। संस्कार और कार्यकुशलता की शिक्षा देने का कार्य निरीक्षिका श्रीमती रंजना जी ने उत्तम प्रकार से किया। कम्प्यूटर और इंगलिश स्पीकिंग का कोर्स भी नियमित रूप से चल रहा है।

झण्डेवाला विभाग

मुखर्जी नगर जिले के महेन्द्र पार्क, ईई ब्लॉक, मॉडल टाउन, लालबाग केन्द्र, मलिकपुर आदि स्थानों पर योगासन के कार्यक्रम आयोजित हुए। इनमें वाचनालय के बच्चों के साथ ही बड़ी संख्या में अन्य लोगों ने भाग लिया और योगासन किए। कुल संख्या 271 रही।

मातृछाया

मातृछाया, मियांवाली नगर में भी योग दिवस मनाया गया। इसमें वहां रह रहे बच्चों ने बहुत ही उत्साह के साथ भाग लिया।

द्वारका जिला

दिल्ली के साध नगर द्वारका स्थित शिव मंदिर परिसर में सेवा भारती ने योग दिवस का आयोजन किया। इसमें सूक्ष्म व्यायाम, प्राणायाम सूर्य नमस्कार तथा सहज सरल आसनों का अभ्यास कराया गया। योग प्रशिक्षक के तौर पर आचार्य रामानुज की उपस्थिति रही जिन्होंने शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए योग की आवश्यकता को रेखांकित किया।

सेवा भारती द्वारा दिल्ली के जिला द्वारिका में अनेक स्थानों पर योग कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें द्वारका के पश्चिम विभाग ब्रह्मपुरी में बच्चों को योग प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिसका विधिवत संचालन बालिका संस्कार केंद्र की शिक्षिका ने किया। वैशाली के सूंडूराम पार्क में योग दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें सेवा भारती के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम वैचारिक संगठनों के अनेक पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सूंडूराम पार्क में आयोजित योग कार्यक्रम में सेवा भारती के जिला अध्यक्ष के साथ-साथ संघ के अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

समस्त स्थलों पर आयोजित कार्यक्रमों में व्यवसायी, छात्र, प्रशासनिक अधिकारी तथा जन सामान्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में योग की व्यावहारिकता तथा उसके महत्व को लेकर जागृति उत्पन्न की गई। समता का नाम योग है और समाज सेवा के लिए समत्व का होना नितांत आवश्यक है इसी भाव के साथ सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने योग दिवस का आयोजन किया।

सेवा भारती के जिला संयोजक तथा अन्य पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में पधारे आगंतुकों का अभिनंदन किया।

शिव मंदिर परिसर स्थित कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के महरौली जिला के महामंत्री श्री रविंद्र सोलंकी, वरिष्ठ पत्रकार श्री सूर्यप्रकाश सेमवाल, सेवा भारती जिला संयोजक श्री रितेश सिंह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर कार्यवाह एवं सह नगर कार्यवाह तथा अन्य महानुभाव उपस्थित रहे।

जिला कमला नगर

कमला नगर जिले के तीन केन्द्रों पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। गुलाबी बाग केन्द्र पर योग दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इसमें योगाभ्यास करने वाले छात्र एवं महिलाओं की संख्या लगभग 45 से 50 रही। योगासन एवं योग का महत्व डॉ प्रवीण बाला ने बताया।सुमन सैनी जी का मार्गदर्शन रहा एवं शिक्षिका संतोष जी मोनिका जी ने सभी व्यवस्थाएं की। सावन पार्क केन्द्र पर योग दिवस एक उत्सव के रूप में मनाया गया। यहां पर योगासन एवं योग का महत्व श्रीमती रमन जी ने करवाए तथा यहां की सभी व्यवस्थाएं शिक्षिका ममता मोदी जी ने की। केन्द्र पर योगासन करने वाले छात्र लगभग 35 से 40 रहे। इसी प्रकार जवाहर नगर केन्द्र पर योग दिवस बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। यहां पर निरीक्षिका दीपा शर्मा जी ने प्रार्थना एवं गायत्री मंत्र के साथ योग दिवस का आरंभ किया। योग की प्रक्रिया एवं योग की आवश्यकता पर दीपा शर्मा जी ने प्रकाश डाला तथा इस कार्य में सहयोग शिक्षिका करूणा जी का रहा है। यहां पर लगभग 24 छात्रों ने योगाभ्यास किया। सभी केन्द्रों पर जलपान की व्यवस्था में केले, छाछ , शर्बत अथवा अल्पाहार रहा।

रामकृष्ण पुरम विभाग में योग

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में 21 जून 2024 रामकृष्ण पुरम विभाग के तीनों जिलों में सभी नगरों पर योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित किये गए। यह कार्यक्रम सेवा बस्ती आधारित रहा जिसमे सभी 6 नगरों के सेवा बस्ती के निवासियों के साथ स्वयंसेवकों ने भी योग अभ्यास किया।

रामकृष्ण पुरम विभाग में 3 जिले हैं: आंबेडकर, मिहिरावली एवं वसंत। आंबेडकर जिले में 6 नगर, मिहिरावली में 7 एवं वसंत जिले में कुल 5 नगर हैं। विभाग के सभी 3 जिलों के 18 नगरों में कुल 21 स्थानों पर योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित हुए। जिसमे कुल 1686 की संख्य में महिला-पुरुषों एवं युवा बालक बालिकाओं ने हिस्सा लिया।

इन सभी कार्यक्रमों में सज्जन शक्ति की भी आह्लादकारी उपस्थिति रही। स्थानीय सेवा बस्तियों के प्रमुख, RWA संगठनों के प्रमुख एवं सज्जन शक्ति के प्रमुख व्यक्तियों को कई स्थानों पर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

जिलावार विवरण निम्न प्रकार से है:-

आंबेडकर जिले में सभी 6 नगरों में कुल 6 सेवा बस्तियों में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित हुए। जिसमे महिलाओं की संख्या 65, पुरुष 162 और युवाओं की कुल 51 की संख्या रही। इस प्रकार से कुल 344 जनों की भागीदारी रही।

मिहिरावली जिले के 7 नगरों में कुल 9 कार्यक्रम आयोजित हुए, प्रत्येक नगरो से सम्बंधित सेवा बस्तियों के अतिरिक्त 2 नगरों की सेवा बस्तियों में से प्रत्येक में योग दिवस पर एक एक अतिरिक्त कार्यक्रम आयोजित हुए। मिहिरावली जिले में 2 महिला योग शिक्षकों ने योग अभ्यास कराया। कार्यक्रमों में उपस्थित संख्या का विवरण महिला संख्या- 211, पुरुष- 415, युवा वर्ग- 185, बालक बालिकाओं की संख्या- 62, इस प्रकार कुल संख्या- 873 की रही।

वसंत जिले के सभी 5 नगरों की सेवा बस्तियों में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कुल 6 कार्यक्रम आयोजित हुए। जिसमे से एक नगर में 2 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महिलाओं की भागीदारी कुल 139 रही, पुरुषों की 216, युवा वर्ग 118 एवं बालक व बालिकाओं की संख्या 72 रही। इस प्रकार वसंत जिले में कुल 469 जनों ने योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दी। आर के पुरम नगर में हिन्दू सम्राज्य दिवस के साथ ही योग दिवस मनाया गया, इस तरह से दो कार्यक्रम वहां सम्पन्न हुए।

योग दिवस का वृत्त 2024 : रामकृष्ण पुरम विभाग-

विभाग का नाम : रामकृष्ण पुरम
कुल ज़िले (संख्या) : 3
कुल नगर (संख्या) : 18
कितने नगरों में कार्यक्रम (संख्या) : 18
कुल कार्यक्रम (संख्या) : 21
कुल महिला योग शिक्षक (संख्या) : 2
कुल भागीदारी (संख्या) : 1686
कुल मुख्य अतिथि: 9

– अमर नाथ
विभाग मंत्री, रामकृष्ण पुरम विभाग
सेवा भारती दिल्ली प्रान्त

केशवपुरम विभाग

केशवपुरम विभाग में सभी जिलों के साथ मिलकर पश्चिम विहार और सेवा भारती, पुष्कर शाखा, तिलक जिला द्वारा योग दिवस मनाया गया। संख्या 278 रही। मुख्य अतिथि श्री संजय जिंदल, सेवा भारती, दिल्ली के प्रांत उपाध्यक्ष थे।

उत्तरी विभाग में योग

सेवा भारती उत्तरी विभाग ने योग दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम विजय विहार के लाल क्वार्टर केशव बस्ती में संचालित सेवा भारती केन्द्र पर हुआ। इसमें सेवा भारती के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ स्थानीय लोगों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत उत्तरी विभाग सेवा भारती के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मित्तल के नेतृत्व में हुआ, जिन्होंने गायत्री मंत्र का सामूहिक उच्चारण कराया। इसके साथ ही उन्होंने योग के महत्व को समझाया और योगासन करके इसके लाभों के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम का समापन संज्ञान मंत्र से हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और अनेक संगठनों के वरिष्ठ कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। ❐

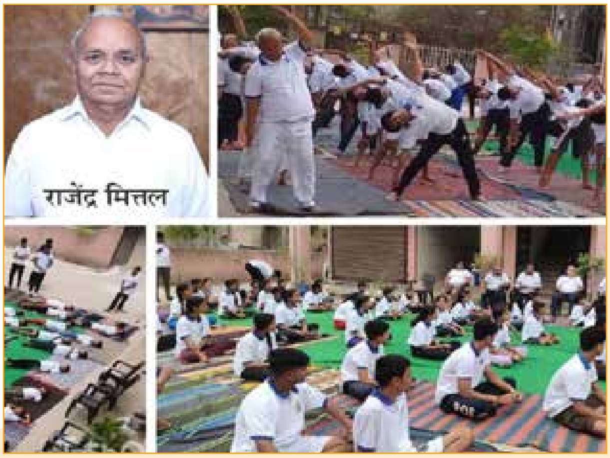

शिव को विशेष प्रिय सावन के सोमवार

■ एफ.सी. भाटिया

भारतीय संस्कृति में श्रावण मास भगवान शिव का माह माना जाता है। इस माह में भगवान शिव की उपासना को विशेष महत्व दिया जाता है। श्रावण आते ही सारा वातावरण शिवमय हो जाता है। सारी दिशाएं जय भोलेनाथ की ध्वनियों से गूंजने लगती हैं।

सावन शुरू होते ही सूखी, प्यासी धरती गीली हो जाती है। नीलकंठ के कंठ को ठंढक पहुंचाती है और सारी प्रकृति शिवमय हो जाती है। शिव मास पूरी तरह भगवान शिव की उपासना के लिए समर्पित है। श्रावण शिव को इसलिए भी प्रिय है कि इस काल में श्रीहरि के साथ पृथ्वी लोक पर लीलाएं रचाते हैं। इन दिनों भगवान शिव और विष्णु की विशेष पूजा होती है। श्रावण माह भगवान भोले को बहुत प्रिय है। इस माह में शिव अर्चना के लिए बेलपत्र और धतूरा सहज मिल जाता है।

मान्यता है कि समुद्र मंथन से अनमोल रत्न के साथ-साथ विष भी निकला। मानवता की रक्षा के लिए शिव जी ने इसे ग्रहण कर अपने कंठ में ही रोक लिया। विष के कारण उनका कंठ नीला पड़ गया। विष के प्रभाव को कम करने के लिए देवतागण शिव का गंगाजल से अभिषेक करने लगे। यही कारण है कि शिव भक्त आज भी सावन के महीने में दूर-दूर से जल लाकर महादेव का जलाभिषेक करते हैं।

श्रावण सोमवार की एक पौराणिक व्रत कथा पूछा तो भगवान भोलेनाथ ने बताया कि जब पहले देवी सती ने महादेव को हर जन्म में पति के रूप में पाने का प्रण किया था। अपने दूसरे जन्म में देवी सती ने पार्वती के नाम से हिमाचल और रानी मैना के घर में पुत्री के रूप में जन्म लिया। तब पार्वती के युवावस्था के सावन महीने में निराहार रहकर कठोर व्रत किया और उन्हें प्रसन्न कर विवाह किया, जिसके बाद ही महादेव के लिए यह विशेष हो गया। इसी कारण श्रावण के महीने में विशेषकर कुमारी लड़कियां अपने सुयोग्य वर की प्राप्ति के लिए श्रावण सोमवार के व्रत रखती हैं। विवाहित महिलाएं श्रावण के सोलह सोमवार कर के दीर्घायु रहने के लिए सत्रहवे सोमवार को उनका उद्यापन करती है। श्रावण मास के प्रथम सोमवार से इस व्रत को शुरू किया जाता है।

प्रथम सोमवार से शुरू किए गए व्रत में गणेशजी, शिवजी, पार्वती जी की पूजा की जाती है। इस सोमवार व्रत से पुत्रहीन पुत्रवान और निर्धन धर्मवान होते हैं। समस्याओं का होता है निदान, नागदेवता भगवान शिव के गले का श्रृंगार होने के कारण नागदेवता की भी पूजा होती है। श्रद्धालुगण कांवड़िये के रूप में पवित्र नदियों में जल लाकर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। माना जाता है कि पहला कांवड़िया रावण या श्रीराम ने भी भगवान शिव को कांवड़ चढ़ाई थी। सोमवार व्रत में उपवास रखना श्रेष्ठ माना जाता है। अनिष्ठों और अकाल मृत्यु से मुक्ति मिल जाती है।

माना जाता है कि प्रत्येक वर्ष सावन महीने में भगवान शिव अपनी ससुराल आते हैं। भक्तों के लिए शिवकृपा पाने के लिए यह उत्तम समय है। इस मास शिव पुराण पढ़ना, सुनना लाभकारी है। शिव पंचाक्षर और गायत्री मंत्र का अधिक से अधिक जप फलदायक है। हे शिव रौद्र रूप दिखाओ और देश में भस्मासुरों का अंत करो। हे शिव हमें इतनी शक्ति दें, इतनी क्षमता दें ताकि हम राष्ट्रधर्म निभा सकें, क्योंकि हम इस मिट्टी का अन्न खाते हैं और इस फिजा में सांस लेते हैं। ❐

बालक/बालिका विकास शिविर संपन्न

अपने केंद्रो में आने वाले सेवित जनों या सेवा बस्ती में रहने वाले हमारे बालक/बालिकाओं हेतु भी एक विकास शिविर होना चाहिए इस मूल विचार को ध्यान में रखकर यमुना विहार विभाग द्वारा पहली बार बालक/बालिका विकास शिविर सेवा धाम में आयोजित किया गया। शिविर 28 जून सायं 6 बजे से 30 जून प्रातः अल्पाहार तक रखा गया था। शिविर में कक्षा 5वी से लेकर कक्षा 8वी तक के बालक/बालिकाओं ने प्रतिभाग किया। कुल संख्या 68 रही। इनमें 38 बालक और 30 बालिकाएं थीं। विशेष आग्रह पर शिविर में कन्या छात्रावास की बहिनें भी उपस्थित रहीं। शिविर में प्रांत कार्यकारिणी सदस्य श्रीमान इंद्रनील का प्रवास रहा और उन्होंने जीवन का लक्ष्य विषय पर विचार रखे। शिविर 5 गट बनाए गए थे जिनके नाम हैं–महाराणा प्रताप गट, वीर शिवाजी गट, स्वामी विवेकानंद गट, भगिनी निवेदिता गट और अहिल्या बाई गट। शिविर में दो विषयों का प्रतिपादन गट अनुसार किया गया जिसमें 'पर्यावरण संरक्षण स्वच्छता' और 'आत्मिक(व्यक्तिगत) विकास' विषय रहे। गट अनुसार विषय एक शिक्षिका और 4 निरीक्षिका बहिनों के माध्यम से प्रतिपादित किए गए। सामूहिक विषय के रूप में 'आदर्श हिंदू परिवार', 'सेवा भारती परिचय', 'परिवार/समाज में मेरा आपसी व्यवहार' आदि विषय रहे। रात्रि कार्यक्रम सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में रहा जिसमें बालक/बालिकाओं ने अपनी सुंदर नृत्य प्रस्तुति दी। प्रातः काल शाखा में शारीरिक व्यायाम के साथ साथ खेल खिलाए जाते थे और सायं काल में केवल विभिन्न प्रकार के सामूहिक खेल खिलाए जाते थे। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

विज्ञापन के लिए आग्रह

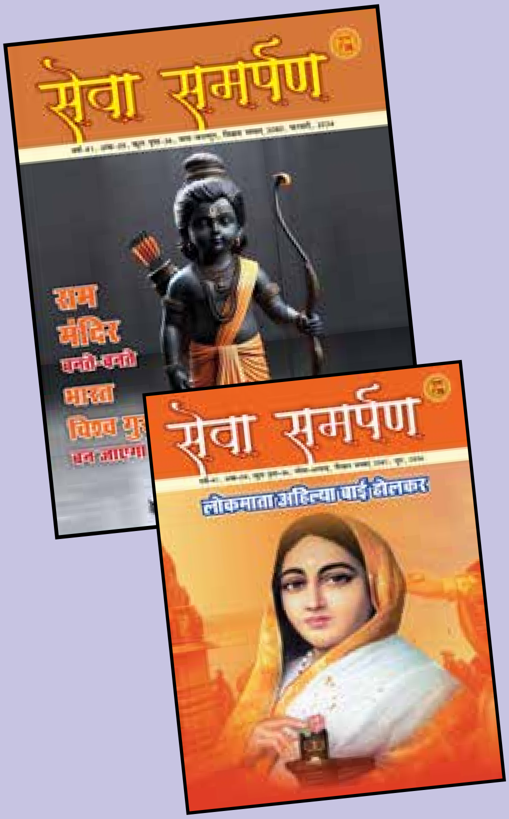

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय- समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है। आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50,000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट,
नई दिल्ली-110001
फोन - 011-23345014-15

समस्याओं के समाधान का केन्द्र

अप्रैल 2010 में रघुवीर नगर के श्री राम मन्दिर में प्रसन्ना सलाह केन्द्र की शुरुआत की गई। सलाह केन्द्र के प्रारंभ करने का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों तथा परिवारों की सहायता करना है जो मानसिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत समस्याओं से ग्रस्त हैं। कार्यकर्ता बहनें उनकी समस्याओं को सुनकर, उनका समाधान करने की कोशिश करती हैं। वार्तालाप करके उन्हें उचित मार्गदर्शन देती हैं। आज यह केन्द्र अनेक लोगों के लिए समस्या निवारण एवं भविष्य में सुखी जीवन के लिए वरदान से कम नहीं है। उचित परामर्श एवं समस्या समाधान के लिए निम्न स्थान पर वर्णित समयानुसार सम्पर्क कर सलाह पायें समाधान मिटायें-

स्थान

राम मन्दिर, रघुवीर नगर, (वीरवार- प्रातः 11 00 से 1.00 बजे)
बी-2/2, मियाँवाली नगर, नई दिल्ली-110087 (शुक्रवार- प्रातः 11.00 से 1.00)
सम्पर्क सूत्र- श्रीमती पायल बंसल (मो. 9650746668)

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 जुलाई, 2024, प्रकाशन तिथि-5 जुलाई, 2024
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak

(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

Pran Vayu Vahan

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

Community Empowerment

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ.. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।